भारतीय ज्ञान परंपरा:

वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

त्रिदिवसीय कार्यशाला

प्रतिवेदन

11 से 13 सितम्बर 2023

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

सारस्वत वक्ता

श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

श्री अशोक कड़ेल, संचालक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

डॉ. मनोहर भंडारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, इंदौर

डॉ. अजय तिवारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, सागर

श्री भरत व्यास, सहायक निदेशक, लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल

डॉ श्रीराम चौथाईवाले, राष्ट्रीय संयोजक, वैदिक गणित, शि.सं. उ. न्यास, नई दिल्ली

डॉ. राकेश भाटिया, राष्ट्रीय सह-संयोजक, वैदिक गणित, शि.सं. उ. न्यास, नई दिल्ली

प्रो. अनुराधा गुप्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय, नईदिल्ली

संचालन समिति

प्रो. नवीन कानगो, निदेशक, शैक्षणिक गतिविधियाँ

प्रा. भवतोष इन्द्र गुरु, अधिष्ठाता, शिक्षा अध्ययनशाला

प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, अधिष्ठाता, मानविकी अध्ययनशाला

प्रो. चंदा बेन, अधिष्ठाता, भाषा अध्ययनशाला

प्रो. आशीष वर्मा, अधिष्ठाता, गणितीय विज्ञान अध्ययनशाला

प्रो. देवाशीष बोस, अधिष्ठाता, व्यवहारिक विज्ञान अध्ययनशाला

प्रो. नागेश दुबे, विभागाध्यक्ष, पाचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

प्रो. वंदना सोनी, विभागाध्यक्ष, भैषजिक विज्ञान

प्रो. बृजेश कुमार श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं सतत् शिक्षा

प्रा. जी.एल. पुणताम्बेकर, आचार्य वाणिज्य विभाग

डॉ. राजेन्द्र कुमार कुरारिया, महाकौशल प्रांत संयोजक, शि.सं.उ.न्या.

डॉ. नीलेश पाण्डे, महाकौशल प्रांत संयोजक-वैदिक गणित, शि.सं.उ.न्या.

आयोजन समिति

संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीया कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

संरक्षक
श्री अतुल कोठारी
राष्ट्रीय सचिव
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली

परामर्शक मण्डल

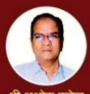
श्री अशोक कड़ेल
संचालक
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

डॉ. अजय तिवारी
प्रांतीय अध्यक्ष – महाकौशल प्रांत
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. राकेश भाटिया
राष्ट्रीय सह संयोजक, वैदिक गणित
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

संयोजक मण्डल

प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा
विभागाध्यक्ष-दर्शन एवं मनोविज्ञान
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष-हिन्दी एवं संस्कृत
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. दिवाकर शुक्ला
विभागाध्यक्ष-गणित एवं सांख्यिकी
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

आयोजन सचिव

डॉ. शशिकुमार सिंह
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

आयोजन सह-सचिव

डॉ. आशुतोष, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. आयुष गुप्ता, सुश्री शिवानी खरे
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

संपर्क

डॉ. शशिकुमार सिंह
आयोजन सचिव-कार्यशाला एवं
समन्वयक, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
मोबाइल संपर्क : 91-89898-89371
ई-मेल : dr.shashiksingh007@gmail.com

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
तथा
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

त्रिदिवसीय कार्यशाला

भारतीय ज्ञान परम्परा: वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

11–13 सितम्बर, 2023
(भाद्रपद कृष्णपक्ष द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी)

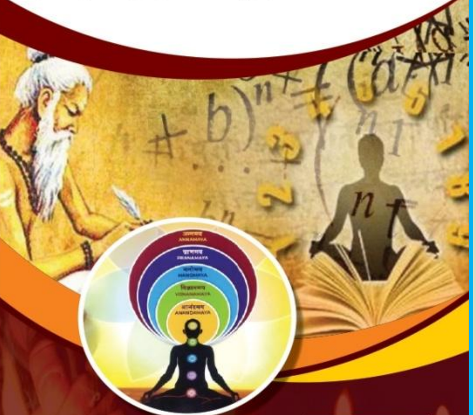

ऑनलाईन पंजीयन हेतु कोड स्केन करें

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (पूर्व में सागर विश्वविद्यालय), उप-शहरी सामाजिक सांस्कृतिक एवं शिक्षायी जन चेतना का एक अभिन्न अंग है, जो 18 जुलाई, 1946 को अस्तित्व में आया। इस विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति डॉ. सर हरीसिंह गौर एक महान् न्यायविद्, प्रखर समतावादी, महान् देशभक्त, परोपकारी, शिक्षाविद् और एक अप्रतिम समाज सुधारक थे। 15 जनवरी 2009 को विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ था। वर्तमान में यह नैक से ग्रेड-A+ धारित है। 1300 एकड़ के विस्तृत भू-भाग में फैले इस विश्वविद्यालय में वर्तमान में 11 संकायों और 40 विभागों के साथ-साथ एज्युकेशन मल्टीमीडिया रिसर्च सेण्टर, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, शिक्षण अधिगम केंद्र (टी.एल.सी), मानव संसाधन विकास केन्द्र, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास, वैदिक गणित केन्द्र, स्वदेशी अध्ययन केन्द्र आदि विविध केन्द्र संचालित हैं, जो अपनी मूल्यपरक एवं गुणवत्तायुक्त अकादमिक सक्रियता से शिक्षा के विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय परिसर

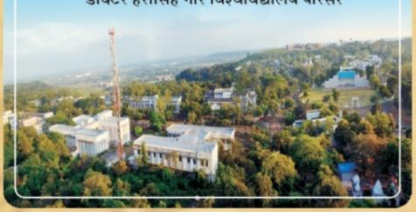

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास भारत के शिक्षा एवं संस्कृति के उन्नयन के क्षेत्र में सतत् कार्यशील महत्वपूर्ण संगठन है। इसकी स्थापना 18 मई 2007 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व प्रचारक तथा विद्याभारती के पूर्व निदेशक श्री दीनानाथ बत्रा जी के द्वारा की गई थी। न्यास का घोषित लक्ष्य वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में भारतीय मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था की स्थापना करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए न्यास शिक्षा के औपनिवेशिक पाठ्यक्रम प्रणाली, विधि और नीति को बदलकर शिक्षा में भारतीयकरण के सन्निवेश को अपरिहार्य मानता है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का महाकौशल प्रांत चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास, वैदिक गणित, शोध प्रकल्प, भाषा मंच एवं आत्मनिर्भर भारत आदि विभिन्न रूपों में भारतीय समाज को भारतीयता के मूल्यबोध से अनुप्राणित करने के लिए सतत् रूप से प्रयत्नशील है।

कार्यशाला का संदर्भ

भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान और विलक्षण प्रज्ञा का प्रतीक है। इसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और अलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय दिखलाई पड़ता है। भारतीय ज्ञान परम्परा का वास्तविक उद्देश्य सदा ही 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय' का रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की सार्वभौमिक कल्याण की भव्य भावना भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। सर्वज्ञानमय वेद भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल स्त्रोत हैं। वेद के संबंध में कहा जाता है कि प्रत्यक्ष और अनुमान से जो ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता उसका ज्ञापक वेद होता है, प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते, एवं विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता। वेद को भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों का बोधक कहा गया है, भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिद्धयति। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद और वेद आधारित अध्ययन की प्रधानता रही है। वेद के ज्ञान के कारण ही भारत विश्व गुरू कहलाता रहा है। परन्तु वर्तमान औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली के प्रभाव से शिक्षा अपने पवित्र उद्देश्यों से विमुख हो गयी है। आवश्यकता है सम्पूर्ण भारतवर्ष में वेदनिष्ठ मूल्यपरक शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित करने की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का क्रियान्वयन इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा की पुनर्प्रतिष्ठा संकल्पित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रावधानों को पूर्णरूप से अंगीकृत किये हुए डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 11-13 सितम्बर, 2023 को डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में एक त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास की दिशा में नवाचारी अनुप्रयोग है। इस कार्यशाला में देश के सुधी विद्वानों द्वारा विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के शिक्षकों, शोधार्थियों और शिक्षा अभ्यासकर्मियों को वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास विषय पर व्याख्यान एवं पोस्टर प्रतियोगिता के माध्यम से उसके सैद्धांतिक और व्यावहारिक अनुप्रयोग के मार्ग सुझाए जाएंगे। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद के महत्व को रेखांकित करने वाली वैदिक संसद काआयोजन किया जायेगा।

कार्यशाला का स्वरूप एवं उद्देश्य

कार्यशाला में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थी, शोधार्थी एवं शिक्षक प्रतिभाग कर सकेंगे। यह कार्यशाला दो भागों में विभक्त होकर एक ही समय में समानान्तर रूप से संचालित होगी। प्रथम भाग में वैदिक गणित और द्वितीय भाग में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास के विषय विद्वत् चर्चा के केन्द्र में रहेंगे।

भारतीय ज्ञान परम्परा:वैदिक गणित

- भारतीय ज्ञान परम्परा का उत्स और वैदिक गणित विषय पर विद्वत चर्चा
- खगोलीय गणना में वैदिक गणित का अनुप्रयोग।
- भूमण्डलीय तकनीक एवं मानस वैदिक गणित अन्त:संबंध।
- कृषि कार्यों और कालगणना में वैदिक गणित की उपयेगिता।
- वेद आधारित शीघ्र गणना की पद्धति का ज्ञान।
- गणित का भारतीय स्वरूप एवं भारतीय गणितज्ञों का योगदान।
- श्रेष्ठ जीवन संसाधन एवं मूल्यों का अर्जन एवं सातत्य।
- वैदिक गणित के क्षेत्र में नवीन शोध।

भारतीय ज्ञान परम्परा: चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

- विद्याथियों के सर्वांगीण विकास के लिए चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास की अवधारणा को समझना
- चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए पंचकोश उपागम की अवधारणा का विश्लेषण करना
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के संदर्भ में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करना
- संम्बन्धित पाठ्यक्रमों के निर्माण एवं गुणवत्तापूर्ण संचालन के लिए सुझाव-पत्र तैयार करना
- चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास हेतु अनुकरणीय यौगिक क्रियाएँ
- चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सावित्रीबाई फुले, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, बालगंगाधर तिलक, सर्वपल्ली राधाकृष्णनन, पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ. हरीसिंह गौर, पं. दीनदयाल उपाध्याय, सन्त गाडगे, गुरू गोविन्द सिंह, एपीजे अब्दुल कलाम, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता आदि।

पंजीकरण प्रक्रिया एवं शुल्क

कार्यशाला में पंजीयन के लिए प्रतिभागियों द्वारा संबंधित पंजीयन शुल्क के साथ गूगल फॉर्म में मांगी गई जानकारी भरना अनिवार्य है। प्रतिभागियों को दोपहर भोजन की सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी।

- विद्यार्थी (स्नातक/परास्नातक) : 200 रू.
- शोधार्थी : 1000 रू.
- शिक्षक : 1500 रू

गूगल फॉर्म लिंक https://forms.gle/8EJTSPmGhK8RuVTu8

कार्यशाला के मुख्य आकर्षण

- पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी (विषय केन्द्रित)
- सर्वश्रेष्ठ पोस्टर को पारितोषिक
- योग अभ्यास सत्र
- वैदिक संसद
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- अंतक्रियात्मक सत्र

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
तथा
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित
त्रिदिवसीय कार्यशाला
भारतीय ज्ञान परम्परा: वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास
11–13 सितम्बर, 2023 (भाद्रपद कृष्णपक्ष द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी)
संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीया कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
संरक्षक
श्री अतुल कोठारी
राष्ट्रीय सचिव
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली
परामर्शक मण्डल
श्री अशोक कड़ेल
संचालक
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
डॉ. अजय तिवारी
प्रांतीय अध्यक्ष – महाकौशल प्रांत
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
डॉ. राकेश भाटिया
राष्ट्रीय सह संयोजक, वैदिक गणित
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
मुख्याकर्षण
श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा उद्बोधन
विषयाधारित सैद्धान्तिक और व्यावहारिक विमर्श
रा. शि. नी.– 2020 के आलोक में वैदिक गणित एवं चरित्र निर्माण का महत्व
वैदिक संसद : विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय
विषयकेंद्रित पोस्टर प्रतियोगिता
संयोजक मण्डल
प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा
विभागाध्यक्ष–दर्शन एवं मनोविज्ञान
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष–हिन्दी एवं संस्कृत
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
प्रो. दिवाकर शुक्ला
विभागाध्यक्ष–गणित एवं सांख्यिकी
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन लिंक
https://forms.gle/8EJTSPmGhK8RuVTu8
आयोजन सचिव
डॉ. शशिकुमार सिंह
त्रिदिवसीय कार्यशाला
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
संपर्क – 8989889371

आमंत्रण
उद्घाटन सत्र
11 सितम्बर, 2023

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर तथा शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नईदिल्ली

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

त्रिदिवसीय कार्यशाला

भारतीय ज्ञान परम्परा: वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

11–13 सितम्बर, 2023 (भाद्रपद कृष्णपक्ष द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी)

मुख्य अतिथि

मा. श्री अरुण कुमार सिंह

जिला एवं सत्र न्यायाधीश

सागर

सारस्वत वक्ता

मा. अतुल कोठारी

राष्ट्रीय सचिव

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नईदिल्ली

अध्यक्षता

मा. प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

विशिष्ट अतिथि

मा. डॉ. अजय तिवारी

प्रांतध्यक्ष, महाकौशल प्रांत, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

मा. डॉ. श्रीराम चौथाईवाले

राष्ट्रीय संयोजक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

मा. श्री अशोक कड़ेल

संचालक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

मा. डॉ. राकेश भाटिया

राष्ट्रीय सह-संयोजक, वैदिक गणित, शि.सं. उ. न्यास, नई दिल्ली

संयोजक

प्रो अम्बिकादत्त शर्मा

विभागाध्यक्ष-दर्शन एवं मनोविज्ञान

डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

प्रो आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

विभागाध्यक्ष-हिन्दी एवं संस्कृत

डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

प्रो दिवाकर शुक्ला

विभागाध्यक्ष-गणित एवं सांख्यिकी

डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

कार्यक्रम में आपकी गरिमामय उपस्थिति प्रार्थनीय है.

भवदीय

डॉ. शशिकुमार सिंह

आयोजन सचिव, त्रिदिवसीय कार्यशाला 2023

प्रात: 10.30 बजे से...

अभिमंच सभागार

भारतीय ज्ञान परंपरा: वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर त्रिदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा: वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ वैदिक परम्पराओं के अनुसार हुआ. कार्यक्रम की शुरुआत में सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के ध्वजारोहण से हुआ. इसी दौरान वैदिक मंत्रोच्चार किया गया. कार्यक्रम का प्रारंभ देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ.

वेदों से निकली है लोकतंत्र एवं न्याय की धारा- न्यायाधीश अरुण कुमार सिंह

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अरुण कुमार सिंह, जिला एवं सत्र न्यायाधीश सागर ने अपने उद्बोधन की शुरुआत संस्कृत के श्लोक से करते हुए कहा कि वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं जिसमें ब्रह्म का स्वरुप निहित है. जो ब्रह्म को जानता है, वही सर्वज्ञानी है. उन्होंने कहा कि सभी मोक्षगामी बनें. व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए. उन्होंने स्वेतउपनिषद का उल्लेख करते हुए वैदिक ज्ञान एवं शास्त्रार्थ का महत्व बताया. उन्होंने कहा कि रामायण में अधिकार और त्याग ही सर्वोपरि है. लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना अधिकार और त्याग से ही हो सकती है. सत्ता उसके पास हो जो शक्ति का उपासक हो. उन्होंने यह भी कहा कि वेद से विज्ञान के सिद्धांत निकले हैं यह बात इसरो के अध्यक्ष ने भी कही है जिससे हमें वैदिक ज्ञान के महत्व के बारे में पता चलता है.

वैश्विक चुनौतियों के समक्ष समर्थ विकल्प हैं वैदिक परम्पराएं- डॉ. अतुल कोठारी

सारस्वत वक्तव्य देते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कार्यशाला के दोनों विषयों पर विश्वविद्यालय पहले से कार्य कर रहा है. भारतीय परंपरा का परिचायक यही है कि पहले काम किया जाए, उसके बाद प्रचार किया जाए. उन्होंने कहा कि ये आनंद की बात है कि शिक्षा जगत में नेतृत्व देने का काम डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कर रहा है. भारतीय ज्ञान परंपरा का आधारभूत ढांचा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास है. उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय ज्ञान बहुत व्यापक है और इसका अध्ययन दुनिया के प्रसिद्ध विद्वान कर रहे हैं. आत्मनिर्भर भारत,

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अंग है. उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रमों की समीक्षा समय-समय पर होनी चाहिए. शिक्षा में देश काल और परिस्थितियों के अनुसार निरंतर प्रवाह बने रहना चाहिए. लगातार चिंतन मंथन होना चाहिए.

उन्होंने प्रश्न करते हुए कहा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' का विचार सिर्फ भारत ने ही क्यों दिया, इस पर विचार करने की आवश्यकता है. हमारी संस्कृति में एकत्व की परंपरा रही है. हमें अपनी परम्परा से जुड़कर आधुनिकता को अपनाना चाहिए. भारतीय संस्कृति में अल्पविराम की बात है, न कि पूर्णविराम की. उनके अनुसार बच्चों पर अंग्रेजी शिक्षा नहीं थोपी नहीं जानी चाहिए और इसका ध्यान नई शिक्षा प्रणाली में रखा गया है. उन्होंने कहा कि भारत का इंडिया नहीं हो सकता. इसीलिए हमें यथावत शब्दों का उपयोग करना चाहिए. एक छात्र को शब्दों के भाव समझने की जरूरत होती है. भारतीय शिक्षा अधिगम प्रक्रिया में 32 प्रकार की शिक्षण पद्धतियों का उल्लेख है. उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा व्यवस्था में तीन प्रकार के बदलाव का आवाह्न किया. जिसमें प्रथम वर्ष में शोध में उन्मुखीकरण, शोध में प्रयोगात्मक कार्य 50:50 के अनुपात में तथा शोध का माध्यम अनिवार्य रूप से मातृभाषा हो, शामिल हैं.

भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक बनें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यक्रम में कई प्रदेशों से प्रतिभागी सम्मिलित हुए हैं. उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं का आवाह्न करते हुए कहा कि उन्हें भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक की भूमिका का निर्वहन करना चाहिए. उन्होंने कहा कि जी-20 की बैठक में विभिन्न देशों ने भी भारतीय संस्कृति को सराहा है. बिना संस्कृति के मानव का समग्र विकास संभव नहीं है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में संचालित देशज ज्ञान केंद्र द्वारा प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न प्रान्तों से विश्वविद्यालय में आकर अपने वैद्यकीय ज्ञान से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं. साथ ही वे वैदिक संस्कृति का भी प्रचार-प्रसार करते हैं. विश्वविद्यालय को देश का प्रथम वैदिक अध्ययन विभाग संचालित करने का गौरव प्राप्त है जिसमें हाल ही में चार वर्षीय पाठ्यक्रम, डिप्लोमा, प्रमाण-पत्र एवं शोध कार्य शुरू किया गया है. उन्होंने कहा कि हमें अपनी संस्कृति को आगे ले जाने का प्रयास करना है. भारत वेदों के लिए जाना जाता है, संस्कृति का हीरा वेद है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि विश्वविद्यालय से निकला हुआ छात्र अपने चरित्र और मूल्यों के आधार पर पहचान स्थापित करे. ऐसे में छात्रों को स्वयं ही अवसर उपलब्ध होंगे.

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यास के महाकौशल प्रान्त अध्यक्ष डॉ. अजय तिवारी एवं मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी के संचालक श्री अशोक कड़ेल मंचासीन थे, कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. आशुतोष ने किया एवं आभार ज्ञापन प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने किया. वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता का शुभारम्भ भी अतिथियों द्वारा किया गया.

कार्यशाला के पहले दिन हुए चार समानांतर तकनीकी सत्र

शिक्षा मनुष्य को पूर्णता की ओर ले जाती है- अशोक कड़ेल

उभयनिष्ठ सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अशोक कड़ेल, संचालक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी ने अपने व्याख्यान में विद्यार्थियों को केंद्र बिंदु में रखते हुए कहा कि आजादी के बाद जिस प्रकार का समाज हम चाहते थे. उस प्रकार के समाज का निर्माण नहीं हो पाया. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे देश में अभी भी हैं. पाश्चात्य संस्कृति में कपड़े, चाल-ढाल एवं बोलने को व्यक्तित्व विकास माना जाता है. जबकि व्यक्तित्व विकास पंचकोशीय विकास है. यह वेद उपनिषद आदि में कहा गया है. जड़ और चेतन सभी इसमें सम्मिलित हैं. उन्होंने कहा कि शिक्षा मनुष्य को पूर्णता की ओर ले जाती है. शिक्षा द्वारा व्यक्ति की क्षमताओं को बाहर लाना ही व्यक्तिव विकास है. शिक्षा का लक्ष्य एवं जीवन का लक्ष्य अलग नही होना चाहिए. नई शिक्षा नीति के अंतर्गत गुणों का विकास करना व्यक्तित्व विकास में आता है. विद्यार्थियों में परिवार के साथ, समाज एवं देश के लिए कार्य करने की सोच नई शिक्षा नीति में दी हुई है. इसमें गतिविधि आधारित शिक्षा शामिल है जो विद्यार्थी जल्दी से सीखते हैं.

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार गणित सर्वश्रेष्ठ विषय- श्रीराम चौथाईवाले

इसी क्रम में श्रीराम चौथाईवाले, राष्ट्रीय संयोजक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने अपने ओजपूर्ण एवं समसामयिक व्याख्यान में बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में मुख्यतः दो विद्या है. परा विद्या और अपरा विद्या. सभी विषयों का मूल गणित है. महर्षि व्यास ने वेद को चार भागों में विभाजित किया जिसमें अंकों का विवरण ऋग्वेद में है. इस तरह गणित विषय का उद्भव वेदों जितना ही पुराना है. हर एक क्षेत्र में गणित आता है. उन्होंने कहा कि वेदों के बाद वाल्मीकि रामायण में गणित का उल्लेख है जो सेतु बंधन में मिलता है. नल ने सेतु की रचना की जिसे विश्वकर्मा का पुत्र भी माना जाता है. उनके अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित को सर्वश्रेष्ठ विषय के रूप में माना गया है. मानवीय जीवन में गणित के प्रयोग को 32 स्रोतों द्वारा सराहा गया है.

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ. अतुल कोठारी ने कहा कि चारकोश को साध लेने से व्यक्ति आनंदमय कोश में चले जाते हैं. व्यक्ति को जीवन के आनंद तक पहुंचना इन कोशो का मुख्य उद्देश्य है. प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान को साथ में लेकर ही चरित्र निर्माण एवं व्यक्तिव विकास संभव है.

समानांतर सत्रों में चरित्र निर्माण और वैदिक गणित के आयामों पर मंथन

कार्यशाला में समानांतर सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें 'भारतीय परम्परा: वैदिक गणित एवं चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास' विषय पर कुल चार तकनीकी सत्र संपन्न हुए. प्रथम तकनीकी सत्र में 'वैदिक मेथड्स फॉर सल्यूशन ऑफ़ लाइनर क्वाडडेट्रिक एंड क्यूबिक इक्वेशन' विषय पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सह संयोजक डॉ. राकेश भाटिया का सारगर्भित एवं बोधगम्य व्याख्यान संपन्न हुआ. इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिवाकर शुक्ल ने की. संचालन डॉ. आयुष गुप्ता एवं आभार शिवानी खरे ने किया.

द्वितीय तकनीकी सत्र में 'दिविजिबिलिटी टेस्ट्स इन वैदिक मैथमेटिक्स' विषय पर वैदिक गणित, न्यास के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. श्रीराम चौथाईवाले का व्याख्यान संपन्न हुआ जिसमें उन्होंने गणित के आरंभिक स्तरों पर विभिन्न संप्रत्ययों का आधारभूत उद्भव एवं संरचना के विषय में बात रखते हुए विषय इसके कई दृष्टांत प्रस्तुत किये. इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. राकेश भाटिया ने की. संचालन शिवानी खरे व आभार डॉ. आयुष गुप्ता ने ज्ञापित किया.

समानांतर सत्र के तृतीय सत्र में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इंदौर के डॉ. मनोहर भंडारी ने 'अन्नमय कोश' की अवधारणा पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया. उक्त सत्र में बोलते हुए डॉ. भंडारी ने भारतीय उपनिषदों में मनोविज्ञान के विभिन्न संप्रत्ययों एवं उनकी भारतीय अवधारणा तथा उनका मानव जीवन से संबंधों को रेखांकित किया. सत्र की अध्यक्षता प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की. संचालन डॉ. नौनिहाल गौतम ने की एवं आभार डॉ. किरण आर्या ने ज्ञापित किया.

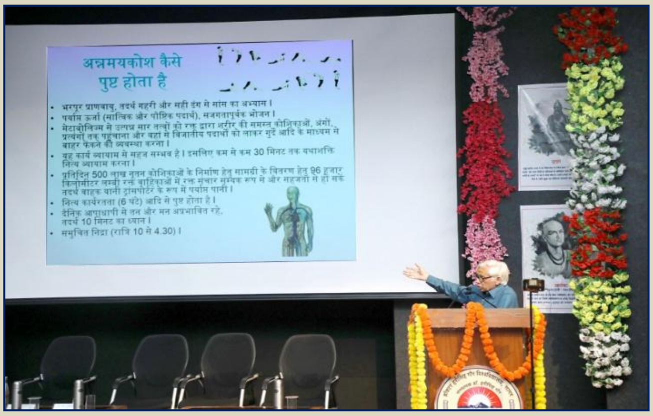

चतुर्थ सत्र 'प्राणमय कोश की अवधारणा' पर बोलते हुए डॉ. अजय तिवारी, प्रांतीय अध्यक्ष, महाकौशल प्रांत शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने भारतीय जीवन दर्शन में पंचकोशों की अवधारणा के एक महत्त्वपूर्ण सोपान प्राणमय कोश एवं उसका मनुष्य के जीवन से तादात्म्य स्थापित करने की भूमिका को उचित दृष्टान्तों के माध्यम से प्रस्तुत किया. इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने की, संचालन डॉ. संजय कुमार एवं आभार डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी ने माना.

भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

कार्यशाला में भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में

किया गया. इस आयोजन में विवि सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित भारत की संस्कृतियों की देशज झलक दिखी.

वैदिक उत्सव 2023 में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

11 से 13 तक योग सत्र का आयोजन

छाया चित्र वीथिका

त्रिदिवसीय कार्यशाला
भारतीय ज्ञान परम्पराः वैदिक गणित और
चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

भारतीय ज्ञान परम्पराः वैदिक गणित और
चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

भारतीय ज्ञान परम्पराः वैदिक गणित और
चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

संकल्प की ओर उन्मुख होना ही मन का विकास है- डॉ. अतुल कोठारी

त्रिदिवसीय कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. अतुल कोठारी अपने उद्बोधन का प्रारम्भ प्रतिभागियों के साथ संवाद से करते हुए मनोमय कोश की सार्थक दृष्टान्तों के माध्यम से व्याख्या करते हुए कहा कि पंचकोश में मनोमय कोश का वर्णन है. जिसका चरित्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है. उन्होंने बताया कि किस तरह से विद्यार्थी मनोमय कोश को समृद्ध करके स्वयं को लाभान्वित कर सकते हैं. उन्होंने मन और संकल्प की चर्चा करते हुए बताया कि मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा

सकता है और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है. साथ ही उन्होंने श्रीमद भगवत गीता के अध्ययन पर बल देते हुए कहा कि "गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है." श्रोताओं से संवाद ने व्याख्यान को बहुत ही रोचक बना दिया जिसमें श्रोता और वक्ता दोनों ही आनंदपूर्वक अंतःक्रिया करते रहे. मन को स्वस्थ रखने की उपायों में कोठारी जी ने

कलाओं की उपयोगिता को महत्वपूर्ण बताया. जिसके अंतर्गत चित्र, संगीत, साहित्य, योग आदि विधाओं का उल्लेख मिलता है इस पूरी प्रक्रिया में ध्यान की उपयोगिता सर्वाधिक होती है. उन्होंने कहा कि "खेलभावना मन के विकास के लिए अतिआवश्यक है. वह सभी लोगों में होना चाहिए." परिवार के बीच संवाद का होना बहुत जरूरी है. साथ ही अच्छी किताबें पढ़ने के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया. दिनचर्या पर बात रखते हुए कहा कि "सुबह व्यायाम अवश्य कीजिए,रोज कुछ अच्छी किताबें पढ़िए, कल क्या करना है उसकी रूपरेखा बनाइये और उसे लिपिबद्ध भी कीजिए. यह मनोकोष को समृद्ध करने के लिए बहुत आवश्यक है." इस महत्त्वपूर्ण सत्र की अध्यक्षता प्रो.चंदा बैन ने की एवं आभार डॉ. नौनिहाल गौतम, सत्र संचालन डॉ किरण आर्या द्वारा किया गया. सत्र में विश्वविद्यालय के अध्यापकगणों की गरिमामयी उपस्थित रही तथा बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

विज्ञानमय कोश से सज्जनता और उदारता का विकास होता है- डॉ. भरत व्यास

कार्यशाला में सामानांतर द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. भरत व्यास, सहायक निदेशक लोक शिक्षण संचलनालय ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में विज्ञानमय कोश के महत्त्व एवं उपादेयता को समझाते हुए कहा कि विज्ञानमय कोश बुद्धि क्षेत्र में आता है इसके माध्यम से सज्जनता और उदारता का विकास होता है जिससे देवत्व उत्पन्न होता है. साथ ही शिक्षानीति पर अपनी बात रखते हुए कहा कि "राष्ट्रीय शिक्षानीति भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करती है. विज्ञान और ज्ञान के मध्य सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि व्यक्ति का व्यक्तित्व तेजस्वी होना चाहिए, जहां विवेक का संचार अपरिहार्य हो. इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी.एल.पुणतांबेकर ने की. सत्र संचालन डॉ.शशिकुमार सिंह एवं आभार ज्ञापन डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया .

अभियांत्रिकी, वास्तुशिल्प एवं सामान्य गणितज्ञों के लिए प्राथमिक स्रोत है- डॉ. राकेश भाटिया

कार्यशाला में वैदिक गणित से संबंधित द्वितीय दिवस के प्रथम समानांतर सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. राकेश भाटिया, सह-समन्वयक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने बौधायन संख्याएँ: त्रिकोणमिति में अनुप्रयोग विषय पर अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया. उन्होंने स्थापत्व उपवेद जोकि अथर्व वेद का एक हिस्सा है की चर्चा करते हुए बताया कि वह अभियांत्रिकी, वास्तुशिल्प एवं सामान्य गणितज्ञों के लिए ज्ञान का एक प्राथमिक स्रोत है. साथ ही बौधायन संख्याओं की धारणा को त्रिक के रूप में दर्शाया जा सकता है और इसके प्रयोग से निष्कर्ष को सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है. सत्र की अध्यक्षता प्रो. श्रीराम चौथाईवाले द्वारा किया गया, सत्र का संचालन सुश्री शिवानी खरे एवं आभार ज्ञापन शोधछात्रा सलोनी शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया.

अविष्कार की यात्रा आवश्यकता से आरंभ होती है- प्रो. अनुराधा गुप्ता

द्वितीय तकनीकी सत्र में वर्गमूल, घन और घनमूल की वैदिक विधियाँ पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अनुराधा गुप्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय ने बताया कि अविष्कार की यात्रा आवश्यकता से आरंभ होती है तथा दैनिक दिनचर्या के कार्यों में वर्ग की आवश्यकता को दृष्टिगत में रखते हुए गणितज्ञों ने वर्ग की उत्पत्ति की. उन्होंने बताया कि वैदिक गणित में उल्लेखित विभिन्न संप्रत्ययों यथा द्विगुणित प्रविधि, विलोकनम प्रविधि, सामान्य प्रविधि आदि का प्रयोग करके किसी भी संख्या का वर्ग, वर्गमूल, घन एवं घनमूल आसानी प्राप्त करने की प्रक्रिया की जा सकती है. सत्र की अध्यक्षता डॉ. राकेश भाटिया द्वारा की गई. सत्र का संचालान डॉ. रजनीश एवं आभार ज्ञापन डॉ. आयुष द्वारा किया गया .

चारित्रिक विकास के द्वारा ही जीवन आनंद की अवस्था पर पहुंचा जा सकता है- डॉ. मनोहर भण्डारी

तृतीय सत्र में मुख्यवक्ता डॉ. मनोहर भण्डारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, इंदौर ने आनंदमय कोश विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए आनंदमय कोश में उल्लेखित चार पुरुषार्थों को जीवन का आधार बताया. साथ ही इसे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कोश बताते हुए कहा कि चारित्रिक विकास के द्वारा ही जीवन आनंद की अवस्था पर पहुंचा जा सकता है. डॉ.भंडारी ने कहा कि चरित्र एक वृक्ष है जिसकी छाया चित्त का स्वभाव और प्रेम है. अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने जैन दर्शन, महावीर स्वामी तथा कबीर का उदाहरण देते हुए आनंदमय कोश को जीवन दर्शन का कोश बताया. सत्र की अध्यक्षता प्रो. नागेश दुबे ने किया सत्र संचालन डॉ. अनिल तिवारी एवं आभार ज्ञापन डॉ. पंकज सिंह द्वारा किया किया. चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. श्रीराम चौथाईवाले, राष्ट्रीय संयोजक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने "महान गणितज्ञ कैपरेकर के दो सिद्धांतों की खोज" विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया. जिसमें उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक गणित की विधियों को प्रासंगिकता को सिद्ध करते हुए विद्यार्थियों वैदिक गणित के प्रयोग हेतु आह्वान किया. सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिवाकर शुक्ल द्वारा की गई. संचालन सुश्री शिवानी खरे एवं आभार डॉ. आयुष गुप्ता द्वारा किया गया.

स्कूली बच्चों ने किया वैदिक संसद में शास्त्रार्थ

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र के अंतिम सत्र में 'वैदिक संसद' का मंचन किया गया जिसमें विविध विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत में वैदिक चर्चा प्रस्तुत की गई. पंडित रविशंकर शुक्ल उ.मा. विद्यालय सागर के विद्यार्थियों द्वारा क्रमश:

'आत्मत्व के स्वरूप पर वाचन', 'ईश्वर', चरित्र निर्माण', 'धर्म का स्वरूप' तथा 'कर्म' पर चर्चा की गई. स्कूली बच्चों द्वारा संस्कृत भाषा में ऋचाओं के वाचन ने श्रोताओं को आनंदित किया. बच्चों की प्रस्तुति ने वैदिक युग की सजीव अनुभूति कराई. केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 के बच्चों ने 'वैदिक धर्म में आत्मा की एकता', 'वैदिक सभ्यता', 'वैदिक संस्कृत' तथा महारानी लक्ष्मीबाई विद्यालय क्र. 1 सागर की छात्राओं द्वारा 'प्रज्ञा', 'आत्मा' विषयों पर प्रस्तुति दी गई. इसके उपरांत संस्कृत विभाग के शोध छात्रों ने बटुक की भूमिका में वेद

ऋचाओं का पाठ किया. वेद मंत्रों की ध्वनि से समूचा अभिमंच सभागार गूंज उठा. सत्र के दौरान विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थित रही. संचालन डॉ. किरन आर्य ने किया, आभार डॉ आयुष गुप्ता ने ज्ञापित किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षकगण, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

अतिथियों ने की मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र की सराहना

कार्यशाला में पधारे अतिथियों ने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय परिसर में स्थित मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र का भ्रमण किया. यहाँ पर उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए ऐसे नवाचारी केंद्रों की संरचना को बेहतर बनाने के उपाय बताये. इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ अतुल कोठारी, श्री अशोक कडेल, डॉ. अजय तिवारी, डॉ. भारत व्यास एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रखना हमारा दायित्व- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र में वैदिक मंत्रोच्चार एवं अतिथियों द्वारा देवी सरस्वती और डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर सत्र की शुरुआत हुई. इस अवसर पर वैदिक गणित विशेषज्ञ श्रीराम चौथाईवाले, डॉ. अजय तिवारी, डॉ. राकेश भाटिया, डॉ. अनुराधा गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप मंच पर उपस्थित थे. इस दौरान संयोजक प्रो. दिवाकर शुक्ला एवं कुलसचिव डॉ रंजन प्रधान भी मंचासीन थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यशाला के संयोजक सचिव डॉ. शशि सिंह द्वारा सम्पूर्ण कार्यशाला के सभी सत्रों का सार प्रस्तुत किया गया.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है. हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस पर पुनः चिंतन करें, मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाएं. इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं. उन्होंने कहा कि हम एक सभ्य संस्कृति के वंशज है और ये कार्यशाला उसी संस्कृति का पुनः स्मरण करवाने का एक प्रयास थी. राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है कि भारतीय ज्ञान परंपरा सो संरक्षित रखते हुए ज्ञान के विविध अनुशासनों में इसकी महत्ता और उपयोगिता को स्थापित करते हुए इसमें नवीन अनुसन्धान हो. विश्वविद्यालय में स्थापित वैदिक अध्ययन विभाग इसी उद्देश्य के साथ कार्य कर रहा है. इसमें संचालित नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान पद्धति की प्रासंगिकता और उसके महत्त्व को जान पायेंगे. चरित्र निर्माण भी इसी परंपरा का एक आयाम है जिसे हमें अपने विद्यार्थियों के बीच करना है. विद्यार्थी ही इसके सच्चे अग्रदूत हैं. इस कार्यशाला का उद्देश्य विश्वविद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं को वैदिक गणित की ज्ञान परंपरा को आत्मसात करवाना था. अब हम भारतीय संस्कृति एवं संस्कार को आगे ले जाने के लिए सक्षम बन चुके हैं. इसका प्रदर्शन हमने जी 20 समिट में भी किया. उन्होंने बताया कि बहुत जल्द ही विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय सेना के जवानों के लिए भी इसी तरह की कार्यशाला का आयोजन करेगा. इसके साथ ही आत्मनिर्भर सागर अभियान के तहत कौशल विकास मेला आयोजित करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है.

विशिष्ट अतिथि डॉ श्रीराम चौथईवाले ने कहा कि यह कार्यशाला, पाठशाला में रूपांतरित हुई और भविष्य में ज्ञानशाला बनेगी. मां सरस्वती के हाथ में जो पुस्तक विद्यमान है वह हमेशा सीखने और सीखने की परंपरा को दर्शाती है और उसी से प्रेरणा लेते हुए हम सभी को इस परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए.

विशिष्ट अतिथि डॉ. अजय तिवारी ने सभी आयोजकों एवं समन्वयकों को कार्यशाला को सफल स्वरूप देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफल हुई है और आगे आने वाले समय में विश्वविद्यालय चरित्र निर्माण एवं वैदिक अध्ययन का एक बड़ा केंद्र बनेगा.

पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता के विजेताओं को मिले प्रमाण-पत्र

कार्यशाला के दौरान वैदिक संस्कृति और चरित्र निर्माण की थीम पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी. इसके विजेताओं प्रदीप कुमार, अभिषेक उपाध्याय, मोनालिसा नायक को कुलपति द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किये गए. वैभव, कालभूत, एवं शिवानी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया. सत्र का संचालन डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया तथा आभार प्रो. दिवाकर शुक्ल ने

ज्ञापित किया. सत्र में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं शहर के गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे.

वैदिक गणित की पाठ्यचर्या पर हुआ मंथन

तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में वैदिक गणित पाठ्क्रम निर्माण की बैठक अतिथि गृह में सम्पन्न हुई जिसमें विद्वानों द्वारा वैदिक गणित के डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यचर्या पर चर्चा करते हुए पाठ्यक्रम निर्माण किया गया. वैदिक गणित के

विद्वान श्रीराम चौथाईवाले ने पाठ्यक्रम को केडिट कोर्स के माध्यम से संचालिते किये जाने का सुझाव दिया जिससे छात्र अधिक रूचि से पढ़ सकें. उन्होंने अनुभाव को साझा करते हुए कहा कि क्रेडिट विधि से इन विषयों को पढाये जाने वाले संस्थानों में बहुत ही सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं . वैदिक गणित के विद्वान डॉ. राकेश भाटिया जी ने कहा इस पाठ्यक्रम की सामग्री विकास को लेकर कई सुझाव दिए. उन्होंने शिक्षण प्रविधियों पर भी चर्चा कि नवाचारी प्रविधि से इस पाठ्यक्रम की ओर बच्चों को आकर्षित किया जा सकता है. इस बैठक में प्रो. दिवाकर शुक्ला, श्रीराम चौथाईवाले, डॉ. राकेश भाटिया, प्रो. अनुराधा गुप्ता, डॉ. शशिकुमार सिंह, शिवानी खरे, डॉ. आयुष गुप्ता, जितेन्द्र मोहन श्रीवास्तव उपस्थित रहे और अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए.

फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों ने दिए सुझाव, प्रश्नों के समाधान भी हुए

फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया जिसमें तीनों दिन उपस्थित प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाओं को मंच पर उपस्थित वक्ताओं के समक्ष रखा. मंच पर उपस्थित वक्ताओं ने उनका समाधान किया. प्रो. बी. के. श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों से सार्थक संवाद किया और प्रतिभागियों के प्रश्नों का समाधान किया. प्रो. अंबिकादत्त शर्मा ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में कहा कि ‘हमारी संस्कृति हमेशा से उदार रही है और हमारे सीखने की संस्कृति भी सदैव से उदार ही रही है. विश्व गुरू के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि ‘विश्व जिन मूल्यों से संचालित होता है जब वे मूल्य हमारे व्यवहार में

उतरते हैं तो विश्व हमारा गुरू हो जाता है’. इसके साथ ही पंचकोशों से संबंधित जिज्ञासाएं भी प्रतिभागियों ने उपस्थित विद्वानों के समक्ष रखीं जिस पर वक्ताओं द्वारा सार्थक चर्चा की गई. अतिथि पी.आर.मलैया ने अपने वक्तव्य से प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट किया. प्रतिभागियों ने आगामी सत्रों में कुछ सुधारात्मक सुझाव भी मंचासीन विद्वानों के समक्ष रखे. अतिथि डॉ. बिंदु सिंह ने कहा कि "सभी को 6 एस (सेवा, साधना, सत्संग, स्वाध्याय, संस्कृति और संस्कार) अपनाना चाहिए. श्री टीकाराम त्रिपाठी ने भी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया. सत्र की अध्यक्षता प्रो. अंबिकादत्त शर्मा ने की. सत्र संचालन डॉ संजय शर्मा ने आभार डॉ. शशिसिंह ने ज्ञापित किया.

लघु नाटिका का हुआ मंचन

तैतिरीय उपनिषद के भृगुवल्ली में वर्णित अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनंदमय के मूल स्वरुप को आधार

बनाकर संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों के द्वारा अत्यंत रोचक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई. जिसके माध्यम से पंच कोशीय उपागम की मूल अवधारणा को प्रत्यक्ष रूप में अभिमंचित होते हुए देखकर दर्शक दीर्घा रोमांचित हो उठी. लघु नाटिका का निर्देशन संस्कृत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया.

छाया चित्र वीथिका

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
भारतीय ज्ञान परम्पराः वैदिक गणित और
चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

भारत के प्राचीन वेदों से निकली है लोकतंत्र एवं न्याय की धारा : अरुण कुमार सिंह

डॉ.हरीसिंह गौर विवि में भारतीय ज्ञान परंपरा पर त्रिदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ, कार्यक्रम में जुटे हैं विषय विशेषज्ञ

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा : वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ वैदिक परम्पराओं के अनुसार हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के ध्वजारोहण से हुआ। इसी दौरान वैदिक मंत्रोच्चार किया गया कार्यक्रम का प्रारंभ देवी सरस्वती एवं डॉ.गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अरुण कुमार सिंह जिला एवं सत्र न्यायाधीश सागर ने अपने उद्बोधन की शुरुआत संस्कृत के श्लोक से करते हुए कहा कि वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं जिसमें ब्रस्म का स्वरुप निहित है। जो ब्रस्म को जानता है, वही सर्वज्ञानी है। उन्होंने कहा कि सभी मोक्षगामी बनें। व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए। उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए। उन्होंने स्वेत उपनिषद का उल्लेख करते हुए वैदिक ज्ञान एवं शास्त्रार्थ का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि रामायण में अधिकार और त्याग ही सर्वोपरि है। लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना अधिकार और त्याग से ही हो सकती है। सत्ता उसके पास हो जो शक्ति का उपासक हो। उन्होंने यह भी कहा कि वेद से विज्ञान के सिद्धांत निकले हैं। यह बात इसरो के अध्यक्ष ने भी कही है जिससे हमें वैदिक ज्ञान के महत्व के बारे में पता चलता है। सारस्वत वक्तव्य देते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ.अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कार्यशाला के दोनों विषयों पर विश्वविद्यालय पहले से कार्य कर रहा है। भारतीय परंपरा का परिचायक यही है कि पहले काम करो, उसके बाद प्रचार किया जाए। उन्होंने कहा कि ये आनंद की बात है कि शिक्षा जगत में नेतृत्व देने का काम डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आधारभूत ढांचा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यक्रम में कई प्रदेशों से प्रतिभागी सम्मिलित हुए हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्र.-छात्राओं का आव्हान करते हुए कहा कि उन्हें भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक की भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि विश्वविद्यालय से निकला हुआ छात्र अपने चरित्र और मूल्यों के आधार पर पहचान स्थापित करे। ऐसे में छात्रों को स्वयं ही अवसर उपलब्ध होंगे इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यास के महाकौशल प्रान्त अध्यक्ष डॉ.अजय तिवारी एवं मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी के संचालक अशोक कडेल मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.आशुतोष ने किया एवं आभार ज्ञापन प्रो.आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने किया। वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता का शुभारम्भ भी अतिथियों द्वारा किया गया।

वेद व पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष : श्री सिंह

भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक गणित और चरित्र निर्माण तथा व्यक्तिव समग्र विकास पर संगोष्ठी

नवभारत न्यूज

सागर 11 सितंबर. डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ वैदिक परम्पराओं के अनुसार हुआ.

मुख्य अतिथि अरुण कुमार सिंह, जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कहा कि वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष है जिसमें ब्रह्म का स्वरुप निहित है. जो ब्रह्म को जानता है, वही सर्वज्ञानी है. उन्होंने कहा कि सभी मोक्षगामी बनें. व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए. शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने कहा कि कार्यशाला के दोनों विषयों पर विश्वविद्यालय पहले से कार्य कर रहा है. भारतीय परंपरा का परिचायक यही है कि पहले काम करो, उसके बाद प्रचार किया जाए. अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि उन्हें भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक की भूमिका का निर्वहन करना चाहिए. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में संचालित देशज ज्ञान केंद्र द्वारा प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न प्रान्तों से विश्वविद्यालय में आकर अपने वैद्यकीय ज्ञान से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं. साथ ही वे वैदिक संस्कृति का भी प्रचार–प्रसार करते हैं. विश्वविद्यालय को देश का प्रथम वैदिक अध्ययन विभाग संचालित करने का गौरव प्राप्त है जिसमें हाल ही में चार वर्षीय पाठ्यक्रम, डिप्लोमा, प्रमाण–पत्र एवं शोध कार्य शुरू किया गया है.

आयोजन । वैश्विक चुनौतियों के समक्ष समर्थ विकल्प हैं वैदिक परम्पराएंः डॉ. कोठारी

वेदों से निकली है लोकतंत्र एवं न्याय की धाराः सिंह

भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक बनें विश्वविद्यालय के विद्यार्थीः कुलपति

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा- वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर त्रिदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा- वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ वैदिक परम्पराओं के अनुसार हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के ध्वजारोहण से हुआ. इसी दौरान वैदिक मंत्रोच्चार किया गया. कार्यक्रम का प्रारंभ देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुयी

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अरुण कुमार सिंह, जिला एवं सत्र न्यायाधीश सागर ने अपने उद्बोधन की शुरुआत संस्कृत के श्लोक से करते हुए कहा कि वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं जिसमें ब्रह्म का स्वरूप निहित है. जो ब्रह्म को जानता है, वही सर्वज्ञानी है। उन्होंने कहा कि सभी मोक्षगामी बनें। व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए. उन्होंने स्वेतउपनिषद का उल्लेख करते हुए वैदिक ज्ञान एवं शास्त्रार्थ का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि रामायण में अधिकार और त्याग ही सर्वोपरि है। लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना अधिकार और त्याग से ही हो सकती है। सत्ता उसके पास हो जो शक्ति का उपासक हो। उन्होंने यह भी कहा कि वेद से विज्ञान के सिद्धांत निकले हैं यह

बात इसरो के अध्यक्ष ने भी कही है जिससे हमें वैदिक ज्ञान के महत्व के बारे में पता चलता है।

सारस्वत वक्तव्य देते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कार्यशाला के दोनों विषयों पर विश्वविद्यालय पहले से कार्य कर रहा है। भारतीय परंपरा का परिचायक यही है कि पहले काम करो, उसके बाद प्रचार किया जाए। उन्होंने कहा कि ये आनंद की बात है कि शिक्षा जगत में नेतृत्व देने का काम डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आधारभूत ढांचा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास है। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय ज्ञान बहुत व्यापक है और इसका अध्ययन दुनिया के प्रसिद्ध विद्वान कर रहे हैं। आत्मनिर्भर भारत, भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अंग है। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रमों की समीक्षा समय-समय पर होनी चाहिए। शिक्षा में देश काल और परिस्थितियों के अनुसार निरंतर प्रवाह बने रहना चाहिए. लगातार चिंतन मंथन होना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यक्रम में कई प्रदेशों से प्रतिभागी सम्मिलित हुए हैं. उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं का आवाह्न करते हुए कहा कि उन्हें भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक की भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जी-20 की बैठक में विभिन्न देशों ने भी भारतीय संस्कृति को सराहा है। बिना संस्कृति के मानव का समग्र विकास संभव नहीं है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यास के महाकौशल प्रान्त अध्यक्ष डॉ. अजय तिवारी एवं मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी के संचालक अशोक कडेल मंचासीन थे, कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. आशुतोष ने किया एवं आभार ज्ञापन प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने किया। वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता का शुभारम्भ भी अतिथियों द्वारा किया गया.

उभयनिष्ठ सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अशोक कड़ेल, संचालक, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी ने अपने व्याख्यान में विद्यार्थियों को केंद्र बिंदु में रखते हुए कहा कि आजादी के बाद जिस प्रकार का समाज हम चाहते थे। उस प्रकार के समाज का निर्माण नहीं हो पाया। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे देश में अभी भी हैं। पाश्चात्य संस्कृति में कपड़े, चाल-ढाल एवं बोलने को व्यक्तित्व विकास माना जाता है।

इसी क्रम में अगले वक्ता के रूप में श्रीराम चौथाईवाले, राष्ट्रीय संयोजक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने अपने ओजपूर्ण एवं समसामयिक व्याख्यान में बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में मुख्यतः दो विद्या है। परा विद्या और अपरा विद्या। सभी विषयों का मूल गणित है। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए अतुल कोठारी ने कहा कि चारकोष को साध लेने से व्यक्ति आनंदमय कोश में चले जाते है।

व्यक्ति को जीवन के आनंद तक पहुंचना इन कोशो का मुख्य उद्देश्य है। प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान को साथ में लेकर ही चरित्र निर्माण एवं व्यक्तिव विकास संभव है। कार्यशाला में भोजन अंतराल के उपरान्त समानांतर सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें 'भारतीय परम्परा- वैदिक गणित एवं चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास' विषय पर कुल चार तकनीकी सत्र संपन्न हुए. प्रथम तकनीकी सत्र में 'वैदिक मेथड्स फॉर सल्यूशन ऑफ़ लाइनर क्राडडेट्रिक एंड क्यूबिक इक्वेशन' विषय पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सह संयोजक डॉ. राकेश भाटिया का सारगर्भित एवं बोधगम्य व्याख्यान संपन्न हुआ. इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिवाकर शुक्ल ने की. संचालन डॉ. आयुष गुप्ता एवं आभार शिवानी खरे ने किया।

आयोजन डा हरीसिंह गौर विवि व शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के तत्वावधन में हुई कार्यशाला

वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं : न्यायाधीश

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ सोमवार को वैदिक परम्पराओं के अनुसार हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के ध्वजारोहण से हुआ। इस दौरान वैदिक मंत्रोच्चार किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला एवं सत्र न्यायाधीश अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं. जिसमें ब्रह्म का स्वरुप निहित है जो ब्रह्म को जानता है वही सर्वज्ञानी है। उन्होंने कहा कि सभी मोक्षगामी बनें। व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए।

तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ वैदिक परंपरानुसार किया गया। • नवदुनिया

पहले काम करो उसके बाद प्रचार किया जाए : सारस्वत वक्तव्य देते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डा. अतुल कोठारी ने कहा कि कार्यशाला के दोनों विषयों पर विवि पहले से कार्य कर रहा है। भारतीय परंपरा का परिचायक यही है कि पहले काम करो उसके बाद प्रचार किया जाए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस कार्यक्रम में कई प्रदेशों से प्रतिभागी सम्मिलित हुए हैं। उन्होंने विवि के छात्र-छात्राओं का आवाह्न करते हुए कहा कि उन्हें भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक की भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जी-20 की बैठक में विभिन्न देशों ने भी भारतीय संस्कृति को सराहा है। बिना संस्कृति के मानव का समग्र विकास संभव नहीं है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यास के महाकौशल प्रान्त अध्यक्ष डा. अजय तिवारी एवं मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी के संचालक अशोक कडेल मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन डा. आशुतोष एवं आभार प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने व्यक्त किया।

कार्यशाला के पहले दिन हुऐ चार समानांतर तकनीकी सत्र हुए। उभयनिष्ठ सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अशोक कड़ेल, संचालक, मप्र हिंदी ग्रन्थ अकादमी ने अपने व्याख्यान में विद्यार्थियों को केंद्र बिंदु में रखते हुए कहा कि आजादी के बाद जिस प्रकार का समाज हम चाहते थे। उस प्रकार के समाज का निर्माण नहीं हो पाया।

दैनिक जन चिंगारी

डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर त्रिदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ।

विवि में भारतीय ज्ञान परंपरा पर तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना त्याग से ही हो सकती है : अरुण कुमार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा : वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का की शुरूआत सोमवार को हुई। आयोजन की शुरूआत भी वैदिक परम्पराओं के अनुसार हुई, शुरूआत में संबद्ध महाविद्यालयों व विश्वविद्यालय का ध्वजारोहण हुआ और इसके बाद अतिथियों ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन-पूजन किया। मुख्य अतिथि जिला एवं सत्र न्यायाधीश अरुण कुमार सिंह ने अपने उद्बोधन की शुरुआत संस्कृत के श्लोक से करते हुए कहा वेद व पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए। रामायण में अधिकार और त्याग ही सर्वोपरि है। लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना अधिकार और त्याग से ही हो सकती है। राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल भाई कोठारी ने प्रश्न करते हुए कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम का विचार सिर्फ भारत ने ही क्यों दिया। इस पर विचार करने की आवश्यकता है। बच्चों पर अंग्रेजी शिक्षा नहीं थोपी जानी चाहिए।

आयोजन श्रीमद् भगवत गीता के अध्ययन पर बल देते हुए कहा कि गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है

संकल्प की ओर उन्मुख होना ही मन का विकास हैः डॉ. अतुल

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा-वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर अभिमंच सभागार में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. अतुल कोठारी अपने उद्बोधन का प्रारम्भ प्रतिभागियों के साथ संवाद से करते हुए मनोमय कोश की सार्थक दृष्टान्तों के माध्यम से व्याख्या करते हुए कहा कि पंचकोश में मनोमय कोश का वर्णन है। जिसका चरित्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। आगे उन्होंने बताया कि किस तरह से विद्यार्थी मनोमय कोश को समृद्ध करके स्वयं को लाभान्वित कर सकते हैं। आगे उन्होंने मन और संकल्प की चर्चा करते हुए बताया कि मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा सकता है। और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है। साथ ही उन्होंने श्रीमद भगवत गीता के अध्ययन पर बल देते हुए कहा कि गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है। श्रोताओं से संवाद ने व्याख्यान को बहुत ही रोचक बना दिया जिसमें श्रोता और वक्ता दोनों ही आनंदपूर्वक अंतःक्रिया करते रहे। मन को स्वस्थ रखने की उपायों में कोठारी जी ने कलाओं की उपयोगिता को महत्वपूर्ण बताया। जिसके अंतर्गत चित्र, संगीत, साहित्य, योग आदि विधाओं का उल्लेख मिलता है इस पूरी प्रक्रिया में ध्यान की उपयोगिता सर्वाधिक होती है। उन्होंने कहा कि खेलभावना मन के विकास के लिए अतिआवश्यक है। वह सभी लोगों में होना चाहिए। परिवार के बीच संवाद का होना बहुत जरूरी है। साथ ही अच्छी किताबें पढ़ने के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया। दिनचर्या पर बात रखते हुए कहा कि सुबह व्यायाम अवश्य कीजिए,रोज कुछ अच्छी किताबें पढ़िए,कल क्या करना है उसकी रूपरेखा बनाइये और उसे लिपिबद्ध भी कीजिए। यह मनोकोष को समृद्ध करने के लिए बहुत आवश्यक है। इस महत्वपूर्ण सत्र की अध्यक्षता प्रो.चंदा बैन ने की एवं आभार डॉ. नौनिहाल गौतम, सत्र संचालन डॉ किरण आर्या द्वारा किया गया। सत्र में विश्वविद्यालय के अध्यापकगणों की गरिमामयी उपस्थित रही तथा काफी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यशाला में सामानांतर द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. भरत व्यास, सहायक निदेशक लोक शिक्षण संचलनालय ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में विज्ञानमय कोश के महत्व एवं उपादेयता को समझाते हुए कहा कि विज्ञानमय कोश बुद्धि क्षेत्र में आता है इसके माध्यम से सज्जनता और उदारता का विकास होता है जिससे देवत्व उत्पन्न होता है। इसी समान्तर सत्र के द्वितीय तकनीकी सत्र में वर्गमूल, घन और घनमूल की वैदिक विधियाँ पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अनुराधा गुप्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय ने बताया कि अविष्कार की यात्रा आवश्यकता से आरंभ होती है तथा दैनिक दिनचर्या के कार्यों में वर्ग की आवश्यकता को दृष्टिगत में रखते हुए गणितज्ञों ने वर्ग की उत्पत्ति की। उन्होंने बताया कि वैदिक गणित में उल्लेखित विभिन्न संप्रत्ययों यथा द्विगुणित प्रविधि, विलोकनम प्रविधि, सामान्य प्रविधि आदि का प्रयोग करके किसी भी संख्या का वर्ग, वर्गमूल, घन एवं घनमूल आसानी प्राप्त करने की प्रक्रिया की जा सकती है। सत्र की अध्यक्षता डॉ. राकेश भाटिया द्वारा की गई। सत्र का संचालान डॉ. रजनीश अग्रहरि एवं आभार ज्ञापन डॉ. आयुष गुप्ता द्वारा किया गया। तृतीय सत्र में मुख्यवक्ता डॉ. मनोहर भण्डारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, इंदौर ने आनंदमय कोश विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए आनंदमय कोश में उल्लेखित चार पुरुषार्थों को जीवन का आधार बताया साथ ही इसे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कोश बताते हुए कहा कि चारित्रिक विकास के द्वारा ही जीवन आनंद की अवस्था पर पहुंचा जा सकता है । डॉ.भंडारी ने आगे कहा कि चरित्र एक वृक्ष है जिसकी छाया चित्त का स्वभाव और प्रेम है। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने जैन दर्शन, महावीर स्वामी तथा कबीर का उदाहरण देते हुए आनंदमय कोश को जीवन दर्शन का कोश बताया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. नागेश दुबे ने किया सत्र संचालन डॉ. अनिल तिवारी एवं आभार ज्ञापन डॉ. पंकज सिंह द्वारा किया किया।

अतिथियों ने की मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र की सराहना

कार्यशाला में पधारे अतिथियों ने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय परिसर में स्थित मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र का भ्रमण किया. यहाँ पर उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए ऐसे नवाचारी केंद्रों की संरचना को बेहतर बनाने के उपाय बताये. इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ अतुल कोठारी, अशोक कडेल, डॉ. अजय तिवारी, डॉ. भारत व्यास एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

आयोजन अभिमंच सभागार में वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर आयोजित की गई कार्यशाला

संकल्प की ओर उन्मुख होना ही मन का विकास है : डा. कोठारी

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर अभिमंच सभागार में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन मंगलवार को डा. अतुल कोठारी ने प्रतिभागियों के साथ संवाद करते हुए कहा कि पंचकोश में मनोमय कोश का वर्णन है जिसका चरित्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। • नवदुनिया

उन्होंने बताया कि किस तरह से विद्यार्थी मनोमय कोश को समृद्ध करके स्वयं को लाभान्वित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा सकता है और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है। "गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है। श्रोताओं से संवाद ने व्याख्यान को बहुत ही रोचक बना दिया जिसमें श्रोता और वक्ता दोनों ही आनंदपूर्वक अंतःक्रिया करते रहे।

उन्होंने कहा कि "खेलभावना मन के विकास के लिए अतिआवश्यक' है। वह सभी लोगों में होना चाहिए।" परिवार के बीच संवाद का होना बहुत जरूरी है। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो.चंदा बैन ने की एवं आभार डा. नौनिहाल गौतम ने माना। संचालन डा. किरण आर्या ने किया।

कार्यशाला में सामानांतर द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डा. भरत व्यास, सहायक निदेशक लोक शिक्षण संचलनालय ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में विज्ञानमय कोश के महत्त्व एवं उपादेयता को समझाते हुए कहा कि" विज्ञानमय कोश बुद्धि क्षेत्र में आता है। "राष्ट्रीय शिक्षानीति भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करती है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति का व्यक्तित्व तेजस्वी होना चाहिए, जहां विवेक का संचार अपरिहार्य हो। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जीएल पुणतांबेकर ने की। सत्र संचालन डा. शशिकुमार सिंह ने किया। कार्यशाला में वैदिक गणित से संबंधित द्वितीय दिवस के प्रथम समानांतर सत्र में मुख्य वक्ता सह-समन्वयक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के डा. राकेश भाटिया ने कहा कि स्थापत्य उपवेद जोकि अथर्व वेद का एक हिस्सा है, की चर्चा करते हुए बताया कि वह अभियांत्रिकी, वास्तुशिल्प एवं सामान्य गणितज्ञों के लिए ज्ञान का एक प्राथमिक स्रोत है। सत्र की अध्यक्षता प्रो. श्रीराम चौथाईवाले ने किया। सत्र का संचालन शिवानी खरे एवं आभार शोधछात्रा सलोनी शर्मा ने प्रस्तुत किया।

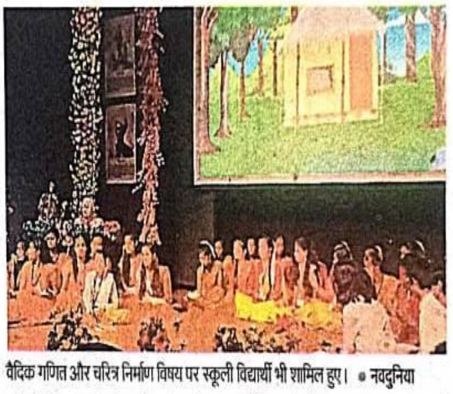

वैदिक गणित और चरित्र निर्माण विषय पर स्कूली विद्यार्थी भी शामिल हुए। • नवदुनिया

मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अनुराधा गुप्ता ने बताया कि अविष्कार की यात्रा आवश्यकता से आरंभ होती है व दैनिक दिनचर्या के कार्यों में वर्ग की आवश्यकता को दृष्टिगत में रखते हुए गणितज्ञों ने वर्ग की उत्पत्ति की। सत्र की अध्यक्षता डा. राकेश भाटिया द्वारा की गई। सत्र का संचालन डा. रजनीश अग्रहरि एवं आभार ज्ञापन डा. आयुष गुप्ता द्वारा किया गया।

तृतीय सत्र में मुख्यवक्ता डा. मनोहर भण्डारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इंदौर ने आनंदमय कोश विषय पर अपना व्याख्यान दिया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. नागेश दुबे ने किया। संचालन डा. अनिल तिवारी एवं आभार डा. पंकज सिंह ने माना।

चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय संयोजक डा. श्रीराम चौथाइवाले ने महान गणितज्ञ कैपरेकर के दो सिद्धांतों की खोज" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिवाकर शुक्ल द्वारा की गई। आभार डा. आयुष गुप्ता द्वारा किया गया।

स्कूली बच्चों ने किया वैदिक संसद में शास्त्रार्थ : कार्यशाला के द्वितीय सत्र के अंतिम सत्र में वैदिक संसद का मंचन किया गया जिसमें विविध विद्यालयों के विद्यार्थियों ने संस्कृत में वैदिक चर्चा प्रस्तुत की। सत्र के दौरान विश्वविद्यालय कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता उपस्थित रही। कार्यशाला में पधारे अतिथियों ने विवि के पुस्तकालय परिसर में स्थित मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र का भ्रमण किया। यहां उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए ऐसे नवाचारी केंद्रों की संरचना को बेहतर बनाने के उपाए बताए।

संकल्प की ओर उन्मुख होना ही मन का विकास है : डॉ. अतुल कोठारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में ज्ञान परंपरा को लेकर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन, विद्यार्थियों ने दी रंगारंग प्रस्तुति

जागरण, सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा : वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अभिमंच सभागार में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ.अतुल कोठारी अपने उद्बोधन का प्रारम्भ प्रतिभागियों के साथ संवाद से करते हुए कहा कि पंचकोश. में मनोमय कोश का वर्णन है। जिसका चरित्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थी मनोमय कोश को समृद्ध करके स्वयं को लाभान्वित कर सकते हैं। उन्होंने मन और संकल्प की चर्चा करते हुए बताया कि मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा सकता है और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है। श्रीमद्भगवत गीता के अध्ययन पर बल देते हुए कहा कि गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है। मन को स्वस्थ रखने की उपायों में कोठारी जी ने कलाओं की उपयोगिता को महत्वपूर्ण बताया। जिसके अंतर्गत चित्र, संगीत साहित्य, योग आदि विधाओं का उल्लेख मिलता है इस पूरी प्रक्रिया में ध्यान की उपयोगिता सर्वाधिक होती है। उन्होंने कहा कि खेलभावना मन के विकास के लिए अतिआवश्यक है। वह सभी लोगों में होना चाहिए। परिवार के बीच संवाद का होना बहुत जरूरी है। साथ ही अच्छी किताबें पढ़ने के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया। दिनचर्या पर बात रखते हुए कहा कि सुबह व्यायाम अवश्य कीजिए रोज कुछ अच्छी किताबें पढ़िए कल क्या करना है उसकी रूपरेखा बनाइये और उसे लिपिबद्ध भी कीजिए। यह मनोकोष को समृद्ध करने के लिए बहुत आवश्यक है। इस महत्वपूर्ण सत्र की अध्यक्षता प्रो. चंदा बैन ने की एवं आभार डॉ.नौनिहाल गौतम, सत्र संचालन डॉ.किरण आर्या द्वारा किया गया। सत्र में विश्वविद्यालय के अध्यापकगणों की गरिमामयी उपस्थित रही तथा काफी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला में समानांतर द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. भरत व्यास, सहायक निदेशक लोक शिक्षण संचालनालय ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में विज्ञानमय कोश के महत्व एवं उपादेयता को समझाते हुए कहा कि विज्ञानमय कोश बुद्धि क्षेत्र में आता है इसके माध्यम से सज्जनता और उदारता का विकास होता है जिससे देवत्व उत्पन्न होता है। साथ ही शिक्षानीति पर अपनी बात रखते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षानीति भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करती है। विज्ञान और ज्ञान के मध्य सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि व्यक्ति का व्यक्तित्व तेजस्वी होना चाहिए जहां विवेक का संचार अपरिहार्य हो। कार्यशाला में वैदिक गणित से संबंधित द्वितीय दिवस के प्रथम समानांतर सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ.राकेश भाटिया ने बताया कि वह अभियांत्रिकी, वास्तुशिल्प एवं सामान्य गणितज्ञों के लिए ज्ञान का एक प्राथमिक स्रोत है। साथ ही बौधायन संख्याओं की धारणा को त्रिक के रूप में दर्शाया जा सकता है और इसके प्रयोग से निष्कर्ष को सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। सत्र की अध्यक्षता प्रो. श्रीराम चौथाईवाले द्वारा किया गया। सत्र का संचालन सुश्री शिवानी खरे एवं आभार ज्ञापन शोधछात्रा सलोनी शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

स्कूली बच्चों ने किया वैदिक संसद में शास्त्रार्थ

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र के अंतिम सत्र में वैदिक संसद का मंचन किया गया जिसमें विविध विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत में वैदिक चर्चा प्रस्तुत की गई। सर्वप्रथम पंडित रविशंकर शुक्ल उमावि विद्यालय सागर के विद्यार्थियों द्वारा क्रमशः आत्मत्व के स्वरूप पर वाचन, ईश्वर, चरित्र निर्माण, धर्म का स्वरूप तथा कर्म पर चर्चा की गई। स्कूली बच्चों द्वारा संस्कृत भाषा में ऋचाओं के वाचन ने श्रोताओं को आनंदित किया। बच्चों की प्रस्तुति ने वैदिक युग की सजीव अनुभूति कराई। केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 के बच्चों ने श्वैदिक धर्म में आत्मा की एकता, श्वैदिक सभ्यता, श्वैदिक संस्कृत तथा महारानी लक्ष्मीबाई विद्यालय क्रमांक-1 सागर की छात्राओं द्वारा प्रज्ञा, आत्मा विषयों पर प्रस्तुति दी गई। इसके उपरांत संस्कृत विभाग के शोध छात्रों ने बटुक की भूमिका में वेद ऋचाओं का पाठ किया। वेद मंत्रों की ध्वनि से समूचा अभिमंच सभागार गूंज उठा। सत्र के दौरान विश्वविद्यालय कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति रही। संचालन डॉ. किरन आर्य ने किया। आभार डॉ. आयुष गुप्ता ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षकगण, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यशाला में पधारे अतिथियों ने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय परिसर में स्थित मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र का भ्रमण किया। यहां पर उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए ऐसे नवाचारी केंद्रों की संरचना को बेहतर बनाने के उपाय बताये।

संकल्प की ओर उन्मुख होना ही मन का विकास है: डॉ. अतुल कोठारी

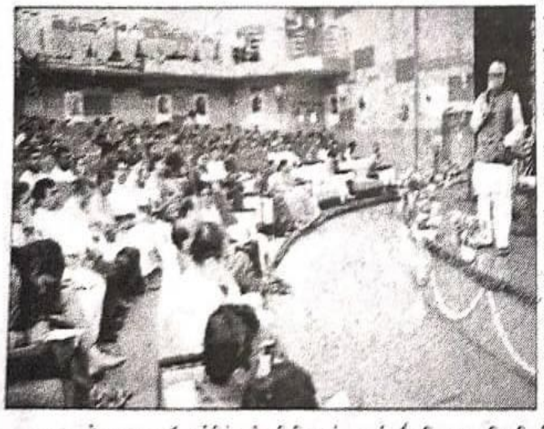

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर अभिमंच सभागार में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. अतुल कोठारी अपने उद्बोधन में कहा कि पंचकोश में मनोमय कोश का वर्णन है। जिसका चरित्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि किस तरह से विद्यार्थी मनोमय कोश को समृद्ध करके स्वयं को लाभान्वित कर सकते हैं। मन और संकल्प की चर्चा करते हुए बताया कि मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा सकता है और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो.चंदा बैन ने की एवं आभार डॉ. नौनिहाल गौतम, सत्र संचालन डॉ. किरण आर्या द्वारा किया गया।

द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. भरत व्यास, सहायक निदेशक लोक शिक्षण संचनालय ने कहा कि विज्ञानमय कोश बुद्धि क्षेत्र में आता है इसके माध्यम से सज्जनता और उदारता का विकास होता है जिससे देवत्व उत्पन्न होता है। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जीएल पुणतांबेकर ने की। संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह एवं आभार ज्ञापन डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया। कार्यशाला में वैदिक गणित से संबंधित द्वितीय दिवस के प्रथम समानांतर सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. राकेश भाटिया, सह.समन्वयक, वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली ने बौधायन संख्याएं त्रिकोणमिति में अनुप्रयोग विषय पर अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने स्थापत्य उपवेद जो कि अथर्व वेद का एक हिस्सा है की चर्चा करते हुए बताया कि यह अभियांत्रिकी, वास्तुशिल्प एवं सामान्य गणितज्ञों के लिए ज्ञान का एक प्राथमिक स्रोत है, साथ ही बौधायन संख्याओं की धारणा को त्रिक के रूप में दर्शाया जा सकता है और इसके प्रयोग से निष्कर्ष को सरलता पूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

अध्यक्षता प्रो. श्रीराम चौथाईवाले द्वारा किया गया, संचालन शिवानी खरे एवं आभार ज्ञापन शोध छात्रा सलोनी शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दैनिक भास्कर **सागर 12-09-2023**

सागर, मंगलवार 12 सितंबर, 2023 | 03

भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

बच्चों पर अंग्रेजी शिक्षा नहीं थोपी जाए, इसका ध्यान नई शिक्षा प्रणाली में रखा गया: डॉ. कोठारी

भास्कर संवाददाता | सागर

वेद एवं पुराण भारतीय ज्ञान के वटवृक्ष हैं, जिसमें ब्रह्म का स्वरूप निहित है। जो ब्रह्म को जानता है, वही सर्व ज्ञानी है। व्यक्ति को सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं होना चाहिए, उसका ज्ञान सामाजिकता और दूसरे के लिए हितकारी होना चाहिए। रामायण में अधिकार और त्याग ही सर्वोपरि हैं। लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना अधिकार और त्याग से ही हो सकती है। सत्ता उसके पास हो जो शक्ति का उपासक हो। वेद से विज्ञान के सिद्धांत निकले हैं। यह बात इसरो के अध्यक्ष ने भी कही है जिससे हमें वैदिक ज्ञान के महत्व के बारे में पता चलता है। यह बात जिला एवं सत्र न्यायाधीश सागर अरुण कुमार सिंह ने डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपराः वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के शुभारंभ में बतौर मुख्य अतिथि कही।

सारस्वत वक्तव्य में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने कहा कार्यशाला के दोनों विषयों पर विश्वविद्यालय पहले से कार्य कर रहा है। भारतीय परंपरा का परिचायक यही है कि पहले काम करो, उसके बाद प्रचार किया जाए। ये आनंद की बात है कि शिक्षा जगत में नेतृत्व देने का काम डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आधारभूत ढांचा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास है। आत्मनिर्भर भारत, भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अंग है। पाठ्यक्रमों की समीक्षा समय-समय पर होनी चाहिए। शिक्षा में देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार निरंतर प्रवाह बने रहना चाहिए। लगातार चिंतन मंथन होना चाहिए। उन्होंने कहा भारतीय संस्कृति में अल्पविराम की बात है, न कि पूर्णविराम की। बच्चों पर अंग्रेजी शिक्षा नहीं थोपी जानी चाहिए। इसका ध्यान नई शिक्षा प्रणाली में रखा गया है। भारत का इंडिया नहीं हो सकता। इसीलिए हमें यथावत शब्दों का उपयोग करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि न्यास के महाकौशल प्रांत अध्यक्ष डॉ. अजय तिवारी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के संचालक अशोक कडेल थे। संचालन डॉ. आशुतोष ने किया। आभार प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने माना।

विवि को देश का पहला वैदिक अध्ययन विभाग संचालित करने का गौरव : कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा भारत में चरित्र निर्माण के ध्वजवाहक की भूमिका का निर्वहन विद्यार्थियों को करना चाहिए। जी-20 की बैठक में विभिन्न देशों ने भी भारतीय संस्कृति को सराहा है। बिना संस्कृति के मानव का समग्र विकास संभव नहीं है। विवि में संचालित देशज ज्ञान केंद्र द्वारा प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न प्रांतों से विश्वविद्यालय में आकर अपने वैद्यकीय ज्ञान से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं। साथ ही वे वैदिक संस्कृति का भी प्रचार-प्रसार करते हैं। विश्वविद्यालय को देश का पहला वैदिक अध्ययन विभाग संचालित करने का गौरव प्राप्त है।

दैनिक भास्कर **सागर 13-09-2023**

विश्वविद्यालय : कार्यशाला के दूसरे दिन वैदिक संसद का मंचन

गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान मिल जाता है: डॉ. कोठारी

भास्कर संवाददाता | सागर

सागर। वैदिक संसद के दौरान विद्यार्थियों ने शास्त्रार्थ किया।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपराः वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर चल रही तीन दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन मंगलवार को डॉ. अतुल कोठारी ने प्रतिभागियों के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा पंचकोश में मनोमय कोश का वर्णन है। जिसका चरित्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा सकता है और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है। गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है।

मन को स्वस्थ रखने के उपायों में डॉ. कोठारी ने कलाओं की उपयोगिता को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा खेल भावना मन के विकास के लिए अति आवश्यक है। वह सभी लोगों में होना चाहिए। परिवार के बीच संवाद का होना बहुत जरूरी है। सुबह व्यायाम अवश्य कीजिए, रोज कुछ अच्छी किताबें पढ़िए, कल क्या करना है उसकी रूपरेखा बनाइए और उसे लिपिबद्ध भी कीजिए। सत्र की अध्यक्षता प्रो.चंदा बेन ने की। संचालन डॉ. किरण आर्या ने किया। दूसरे सत्र में मुख्य वक्ता सहायक निदेशक लोक शिक्षण संचालनालय डॉ. भरत व्यास ने कहा राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करती है। सत्र की अध्यक्षता प्रो. जीएल पुणतांबेकर ने की। संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया। वैदिक गणित से संबंधित सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के वैदिक गणित के सह समन्वयक डॉ. राकेश भाटिया थे। अध्यक्षता प्रो. श्रीराम चौथाईवाले ने की। संचालन शिवानी खरे ने किया। इसी के तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. अनुराधा गुप्ता थीं।

स्कूली बच्चों ने किया वैदिक संसद में शास्त्रार्थ : इस दौरान वैदिक संसद का मंचन किया गया। जिसमें विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत में वैदिक चर्चा की गई। पंडित रविशंकर शुक्ल हायर सेकंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने आत्मत्व के स्वरूप पर वाचन, ईश्वर, चरित्र निर्माण, धर्म का स्वरूप तथा कर्म पर चर्चा की। केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 के बच्चों ने वैदिक धर्म में आत्मा की एकता, वैदिक सभ्यता, वैदिक संस्कृत तथा महारानी लक्ष्मीबाई विद्यालय क्रमांक-1 की छात्राओं ने प्रज्ञा, आत्मा विषयों पर प्रस्तुति दी। संस्कृत विभाग के शोध छात्रों ने बटुक की भूमिका में वेद ऋचाओं का पाठ किया।

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रखना हमारा दायित्वः कुलपति

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंतिम दिवस पर समापन सत्र आयोजित किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार एवं अतिथियों द्वारा देवी सरस्वती और डॉ गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया. इस अवसर पर वैदिक गणित विशेषज्ञ श्रीराम चौथाईवाले, डॉ. अजय तिवारी, डॉ. राकेश भाटिया, डॉ. अनुराधा गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे. इस दौरान संयोजक प्रो. दिवाकर शुक्ला एवं कुलसचिव डॉ रंजन प्रधान भी मंचासीन थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यशाला के संयोजक सचिव डॉ. शशि सिंह जी द्वारा सम्पूर्ण कार्यशाला के सभी सत्रों का सार प्रस्तुत किया गया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है. हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस पर पुन: चिंतन करें, मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाएं। इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं. उन्होंने कहा कि हम एक सभ्य संस्कृति के वंशज है और ये कार्यशाला उसी संस्कृति का पुन: स्मरण करवाने का एक प्रयास थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है कि भारतीय ज्ञान परंपरा सो संरक्षित रखते हुए ज्ञान के विविध अनुशासनों में इसकी महत्ता और उपयोगिता को स्थापित करते हुए इसमें नवीन अनुसन्धान हो। विश्वविद्यालय में स्थापित वैदिक अध्ययन विभाग इसी उद्देश्य के साथ कार्य कर रहा है। इसमें संचालित नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान पद्धति की प्रासंगिकता और उसके महत्त्व को जान पायेंगे. चरित्र निर्माण भी इसी परंपरा का एक आयाम है जिसे हमें अपने विद्यार्थियों के बीच करना है. विद्यार्थी ही इसके सच्चे अग्रदूत हैं. इस कार्यशाला का उद्देश विश्वविद्यालय में अध्यनरत छात्र छात्राओं को वैदिक गणित की ज्ञान परंपरा को आत्मसात करवाना था। विशिष्ट अतिथि डॉ. अजय तिवारी ने सभी आयोजकों एवं समन्वयकों को कार्यशाला को सफल स्वरूप देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफल हुई है और आगे आने वाले समय में विश्वविद्यालय चरित्र निर्माण एवं वैदिक अध्ययन का एक बड़ा केंद्र बनेगा।

संकल्प की ओर उन्मुख होना ही मन का विकास : डॉ. कोठारी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा- वैदिक गणित, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर संयुक्त कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला के दूसरे दिन डॉ.अतुल कोठारी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा विद्यार्थी मनोमय कोश को समृद्ध करके स्वयं को लाभान्वित कर सकते हैं। मन को संकल्प के द्वारा बांधा जा सकता है और संकल्प की ओर जाना ही मन का विकास है। उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता के अध्ययन पर बल देकर कहा ''गीता में मनुष्य की सारी समस्याओं का समाधान निहित है।'' श्रोताओं से संवाद ने व्याख्यान को रोचक बनाया। कला प्रति योगिताओं को मन को स्वस्थ रखने का अहम साधन बताया। खेल भावना मन के विकास के लिए जरूरी है। परिवार के बीच संवाद का होना बहुत जरूरी है। सत्र की अध्यक्षता प्रो.चंदा बैन ने की आभार डॉ. नौनिहाल गौतम व संचालन डॉ. किरण आर्या ने किया। सत्र में विवि के अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। दूसरे सत्र में लोक शिक्षण संचालनालय के सहायक निदेशक डॉ. भरत व्यास ने विज्ञानमय कोश के महत्व एवं उपादेयता को समझाया। ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व तेजस्वी होना चाहिए, जहां विवेक का संचार अपरिहार्य हो। इस सत्र में प्रो. जीएल पुणतांबेकर, डॉ. शशिकुमार सिंह मौजूद रहे।

संस्कृत में किया शास्त्रार्थ, वेदों की ऋचाओं से सुरभित हुआ सभागार

सागर @ पत्रिका. केंद्रीय विश्वविद्यालय में शास्त्रार्थ कार्यशाला के दूसरे दिन वैदिक संसद का मंचन किया गया। इस मौके पर विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत में वैदिक चर्चा और शास्त्रार्थ किया गया। पंडित रविशंकर शुक्ल उमा विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा 'आत्मत्व के स्वरूप', 'ईश्वर', चरित्र निर्माण', 'धर्म का स्वरूप' तथा 'कर्म' पर संस्कृत में चर्चा की गई। केन्द्रीय विद्यालय क्र-1 के विद्यार्थियों ने 'वैदिक धर्म में आत्मा की एकता', 'वैदिक सभ्यता', 'वैदिक संस्कृत', एमएलबी क्र-1 सागर की छात्राओं ने 'प्रज्ञा', 'आत्मा' विषयों पर प्रस्तुति दी गई। संस्कृत विभाग के शोध छात्रों ने बटुक की भूमिका में वेद ऋचाओं का पाठ किया। सत्र में कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता, डॉ.किरन आर्या, डॉ.आयुष गुप्ता सहित शिक्षक, शोधार्थी भी मौजूद रहे।

वैदिक संसद सभा में भाग लिया छात्राओं ने

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में वैदिक उत्सव के रूप में वैदिक गणित एवं चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर आयोजित वैदिक संसद सभा में ईएफए पं.रविशंकर शुक्ल शास. कन्या उमा विद्यालय की छात्राओं ने सहभगिता निभाई. प्रचार समिति द्वारा प्रतिभा प्रोत्साहन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई. लोकगीत विधा में सेजल प्रजापति कक्षा 12वीं की छात्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया. विद्यार्थियों की विषय मार्गदर्शिका प्रभारी शिक्षक डॉ. ख्याति बेलापुरकर, सहयोगी शिक्षक डॉ. आशीष जैन, राकेश कुमार जैन, राजेन्द्र जैन ने किया. भारतीय परिवेश में परिधान एवं समन्वय रिंकी राठौर ने किया. प्राचार्य डॉ. महेन्द्र प्रताप तिवारी ने छात्राओं को बधाई दी.

संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को बनाए रखना हमारा दायित्व

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सहयोग से डॉ.हरि सिंह गौर विवि में तीन दिवसीय कार्यशाला का बुधवार को समापन हो गया। कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में अलग- अलग बिंदुओं पर विद्वानों ने चिंतन कर मार्गदर्शन किया।

अपने संबोधन में कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है। हमारा कर्त्तव्य है हम उस पर चिंतन करें, मनन करें और आगे ले जाएं। इस माध्यम से हम भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है कि भारतीय ज्ञान परंपरा सो संरक्षित रखते हुए ज्ञान के विविध अनुशासनों में इसकी महत्ता और उपयोगिता को स्थापित करते हुए इसमें नवीन अनुसंधान हों। डॉ.श्रीराम चौथाईवाले ने कहा यह कार्यशाला, पाठशाला में रूपांतरित हुई और भविष्य में ज्ञानशाला बनेगी।

, मां सरस्वती के हाथ में जो पुस्तक विद्यमान है वह हमेशा सीखने और सीखने की परंपरा को दर्शाती है और उसी से प्रेरणा लेते हुए हम सभी को इस परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए। डॉ.अजय तिवारी ने कार्यशाला की सफलता पर धन्यवाद ज्ञापित किया। विवि में कार्यशाला के दौरान वैदिक संस्कृति और चरित्र निर्माण विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विजेता रहे छात्र प्रदीप कुमार, अभिषेक उपाध्याय, मोनालिसा नायक को कुलपति ने प्रमाण-पत्र प्रदान किए। वहीं वैभव कालभूत, एवं शिवानी को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। सत्र का संचालन डॉ.नौनिहाल गौतम ने किया जबकि आभार प्रो.दिवाकर शुक्ल माना। विवि में वैदिक गणित की पाठ्यचर्या पर विद्वानों ने चिंतन किया। वैदिक गणित पाठ्यक्रम निर्माण की बैठक में डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यचर्या पर चर्चा की गई। श्रीराम चौथाईवाले ने पाठ्यक्रम को क्रेडिट कोर्स के माध्यम से संचालित करना का सुझाव दिया। डॉ. राकेश भाटिया ने शिक्षण प्रविधियों पर चर्चा कर नवाचारी प्रविधि से बच्चों को आकर्षित करने के बारे में बताया। प्रो. दिवाकर शुक्ला, श्रीराम चौथाईवाले, डॉ. राकेश भाटिया, प्रो. अनुराधा गुप्ता, डॉ. शशिकुमार सिंह, शिवानी खरे, डॉ. आयुष गुप्ता, जितेन्द्र मोहन श्रीवास्तव भी उपस्थित रहे। वहीं फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों ने प्रश्नों के समाधान किया। इस मौके पर प्रो.बीके श्रीवास्तव, प्रो.अंबिकादत्त शर्मा, पीआर मलैया जी ने प्रतिभागियों की जिज्ञासा को संतुष्ट किया।

कार्यशाला वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित

भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखना हमारा दायित्वः कुलपति

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपराः वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंतिम दिन कार्यक्रम का वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ हुआ।

सागर। विवि में राष्ट्रीय कार्यशाला का बुधवार को समापन हुआ। ● नवदुनिया

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस पर पुनः चिंतन करें, मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाएं। इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि हम एक सभ्य संस्कृति के वंशज है और ये कार्यशाला उसी संस्कृति का पुनः स्मरण करवाने का एक प्रयास थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है कि भारतीय ज्ञान परंपरा सो संरक्षित रखते हुए ज्ञान के विविध अनुशासनों में इसकी महत्ता और उपयोगिता को स्थापित करते हुए इसमें नवीन अनुसन्धान हो। विश्वविद्यालय में स्थापित वैदिक अध्ययन विभाग इसी उद्देश्य के साथ कार्य कर रहा है। इसमें संचालित नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान पद्धति की प्रासंगिकता और उसके महत्त्व को जान पाएंगे। उन्होंने बताया कि बहुत जल्द ही विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय सेना के जवानों के लिए भी इसी तरह की कार्यशाला का आयोजन करेगा।

कार्यशाला पाठशाला में हुई रूपांतरित : विशिष्ट अतिथि डा. श्रीराम चौथइवाले ने कहा कि यह कार्यशाला, पाठशाला में रूपांतरित हुई और भविष्य में ज्ञानशाला बनेगी।

विशिष्ट अतिथि डा. अजय तिवारी ने कहा कि आगे आने वाले समय में विवि चरित्र निर्माण एवं वैदिक अध्ययन का एक बड़ा केंद्र बनेगा। प्रो. बीके श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों से संवाद किया। प्रो.अंबिकादत्त शर्मा ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में कहा कि हमारी संस्कृति हमेशा से उदार रही है और हमारे सीखने की संस्कृति भी सदैव से उदार ही रही है। अतिथि पीआर मलैया ने प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट किया। अतिथि डा. बिंदु सिंह ने कहा कि सभी को छह एस (सेवा,साधना,सत्संग,स्वाध्याय,संस्कृति और संस्कार) अपनांना चाहिए। टीकाराम त्रिपाठी ने भी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। संचालन डा संजय शर्मा ने किया व आभार डा. शशिसिंह ने ज्ञापित किया। तैतिरीय उपनिषद के भृगुवल्ली में वर्णित अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनंदमय के मूल स्वरुप को आधार बनाकर संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों के द्वारा अत्यंत रोचक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई।

पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता के विजेताओं को मिले प्रमाण-पत्र

कार्यशाला के दौरान वैदिक संस्कृति और चरित्र निर्माण की थीम पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसके विजेताओं प्रदीप कुमार,अभिषेक उपाध्याय,मौनालीशा नायक को कुलपति द्वारा प्रमाण-पत्र दिए गए। वैभव, कालभूत, एवं शिवानी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। सत्र का संचालन डा. नौनिहाल गौतम ने किया व आभार प्रो. दिवाकर शुक्ल ने ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में वैदिक गणित पाठ्क्रम निर्माण की बैठक अतिथि गृह में सम्पन्न हुई जिसमें विद्वानों द्वारा वैदिक गणित के डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यचर्या पर चर्चा करते हुए पाठ्यक्रम निर्माण किया गया। वैदिक गणित के विद्वान श्रीराम चौथाइवाले ने पाठ्यक्रम को केडिट कोर्स के माध्यम से संचालिते करने का सुझाव दिया जिससे छात्र अधिक रूचि से पढ़ सकें। वैदिक गणित के विद्वान डा. राकेश भाटिया, प्रो. दिवाकर शुक्ला, डा. राकेश भाटिया, प्रो. अनुराधा गुप्ता, डा. शशिकुमार सिंह, शिवानी खरे, डा. आयुष गुप्ता, जितेन्द्र मोहन श्रीवास्तव उपस्थित रहे।फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया जिसमें तीनों दिन उपस्थित प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाओं को मंच पर उपस्थित वक्ताओं के समक्ष रखा।

संस्कृति व ज्ञान परंपरा को अक्षुण्य रखना हमारा दायित्व : कुलपति गुप्ता

विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन, समापन दिवस पर विषय विशेषज्ञों ने भारतीय परंपरा-दर्शन को बताया अद्भुत

जागरण सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा : वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंतिम दिवस पर समापन सत्र आयोजित किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार एवं अतिथियों द्वारा देवी सरस्वती और डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस पर पुनः चिंतन करें, मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाएं। इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि हम एक सभ्य संस्कृति के वंशज है और ये कार्यशाला उसी संस्कृति का पुनः स्मरण करवाने का एक प्रयास थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है कि भारतीय ज्ञान परंपरा सो संरक्षित रखते हुए ज्ञान के विविध अनुशासनों में इसकी महत्ता और उपयोगिता को स्थापित करते हुए इसमें नवीन अनुसन्धान हो। विश्वविद्यालय में स्थापित वैदिक अध्ययन विभाग इसी उद्देश्य के साथ कार्य कर रहा है। इसमें संचालित नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान पद्धति की प्रासंगिकता और उसके महत्व को जान पायेंगे। विशिष्ट अतिथि डॉ.श्रीराम चौथईवाले ने कहा कि यह कार्यशाला, पाठशाला में रूपांतरित हुई और भविष्य में ज्ञानशाला बनेगी। मां सरस्वती के हाथ में जो पुस्तक विद्यमान है वह हमेशा सीखने और सीखने की परंपरा को दर्शाती है और उसी से प्रेरणा लेते हुए हम सभी को इस परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ.अजय तिवारी ने सभी आयोजकों एवं समन्वयकों को कार्यशाला को सफल स्वरूप देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफल हुई है और आगे आने वाले समय में विश्वविद्यालय चरित्र निर्माण एवं वैदिक अध्ययन का एक बड़ा केंद्र बनेगा। कार्यशाला के दौरान वैदिक संस्कृति और चरित्र निर्माण की थीम पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसके विजेताओं को कुलपति द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किये गए। तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में वैदिक गणित पाठ्यक्रम निर्माण की बैठक अतिथि गृह में सम्पन्न हुई जिसमें विद्वानों द्वारा वैदिक गणित के डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यचर्या पर चर्चा करते हुए पाठ्यक्रम निर्माण किया गया। फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया जिसमें तीनों दिन उपस्थित प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाओं को मंच पर उपस्थित वक्ताओं के समक्ष रखा। मंच पर उपस्थित वक्ताओं ने उनका समाधान किया। प्रो. बीके. श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों से सार्थक संवाद किया और प्रतिभागियों के प्रश्नों का समाधान किया। प्रो. अंबिकादत्त शर्मा जी ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में कहा कि हमारी संस्कृति हमेशा से उदार रही है और हमारे सीखने की संस्कृति भी सदैव से उदार ही रही है। अतिथि पीआर मलैया ने अपने वक्तव्य से प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट किया। प्रतिभागियों ने आगामी सत्रों में कुछ सुधारात्मक सुझाव भी मंचासीन विद्वानों के समक्ष रखे।

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रखना हमारा दायित्वः कुलपति नीलिमा गुप्ता

सागर (आरएनएन)। डॉ.हरीसिंह गौर विवि एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्ववाधान में भारतीय ज्ञान परंपराः वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंतिम दिवस पर समापन सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर वैदिक गणित विशेषज्ञ श्रीराम चौथाई वाले, डॉ. अजय तिवारी, डॉ.राकेश भाटिया,डॉ.अनुराधा गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने की।

कार्यशाला के संयोजक सचिव डॉ.शशि सिंह द्वारा सम्पूर्ण कार्यशाला के सभी सत्रों का सार प्रस्तुत किया गया। प्रो.नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस पर पुनः चिंतन करें, मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाए। इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं। हम एक सभ्य संस्कृति के वंशज है और ये कार्यशाला उसी संस्कृति का पुनः स्मरण करवाने का एक प्रयास थी। इस कार्यशाला का उद्देश विश्वविद्यालय में अध्यनरत छात्र.छात्राओं को वैदिक गणित की ज्ञान परंपरा को आत्मसात करवाना था। डॉ.श्रीराम चौथईवाले ने कहा कि यह कार्यशाला,पाठशाला में रूपांतरित हुई और भविष्य में ज्ञानशाला बनेगी। मां सरस्वती के हाथ में जो पुस्तक विद्यमान है वह हमेशा सीखने और सीखने की परंपरा को दर्शाती है और उसी से प्रेरणा लेते हुए हम सभी को इस परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ.अजय तिवारी ने सभी आयोजकों एवं समन्वयकों को कार्यशाला को सफ्ल स्वरूप देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफ्ल हुई है और आगे आने वाले समय में विश्वविद्यालय चरित्र निर्माण एवं वैदिक अध्ययन का एक बडा केंद्र बनेगा। पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता के विजेताओं को मिले प्रमाण पत्र, सत्र का संचालन डॉ.नौनिहाल गौतम ने किया।

आयोजन

फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों ने दिए सुझाव, प्रश्नों के समाधान भी हुए

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रखना हमारा दायित्वः गुप्ता

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंतिम दिवस पर समापन सत्र आयोजित किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार एवं अतिथियों द्वारा देवी सरस्वती और डॉ गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया. इस अवसर पर वैदिक गणित विशेषज्ञ श्रीराम चौथाईवाले, डॉ. अजय तिवारी, डॉ. राकेश भाटिया, डॉ. अनुराधा गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस दौरान संयोजक प्रो. दिवाकर शुक्ला एवं कुलसचिव डॉ रंजन प्रधान भी मंचासीन थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यशाला के संयोजक सचिव डॉ. शशि सिंह जी द्वारा सम्पूर्ण कार्यशाला के सभी सत्रों का सार प्रस्तुत किया गया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है. हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस पर पुनः चिंतन करें, मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाएं. इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं. उन्होंने कहा कि हम एक सभ्य संस्कृति के वंशज है और ये कार्यशाला उसी संस्कृति का पुनः स्मरण करवाने का एक प्रयास थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है कि भारतीय ज्ञान परंपरा सो संरक्षित रखते हुए ज्ञान के विविध अनुशासनों में इसकी महत्ता और उपयोगिता को स्थापित करते हुए इसमें नवीन अनुसन्धान हो. विश्वविद्यालय में स्थापित वैदिक अध्ययन विभाग इसी उद्देश्य के साथ कार्य कर रहा है. इसमें संचालित नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान पद्धति की प्रासंगिकता और उसके महत्त्व को जान पायेंगे. चरित्र निर्माण भी इसी परंपरा का एक आयाम है जिसे हमें अपने विद्यार्थियों के बीच करना है. विद्यार्थी ही इसके सच्चे अग्रदूत हैं. इस कार्यशाला का उद्देश विश्वविद्यालय में अध्यनरत छात्र छात्राओं को वैदिक गणित की ज्ञान परंपरा को आत्मसात करवाना था। अब हम भारतीय संस्कृति एवं संस्कार को आगे ले जाने के लिए सक्षम बन चुके हैं. इसका प्रदर्शन हमने जी 20 समिट में भी किया। उन्होंने बताया कि बहुत जल्द ही विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय सेना के जवानों के लिए भी इसी तरह की कार्यशाला का आयोजन करेगा. इसके साथ ही आत्मनिर्भर सागर अभियान के तहत कौशल विकास मेला आयोजित करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है.। विशिष्ट अतिथि डॉ श्रीराम चौथईवाले ने कहा कि यह कार्यशाला, पाठशाला में रूपांतरित हुई और भविष्य में ज्ञानशाला बनेगी। मां सरस्वती के हाथ में जो पुस्तक विद्यमान है वह हमेशा सीखने और सीखने की परंपरा को दर्शाती है और उसी से प्रेरणा लेते हुए हम सभी को इस परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. अजय तिवारी ने सभी आयोजकों एवं समन्वयकों को कार्यशाला को सफल स्वरूप देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफल हुई है और आगे आने वाले समय में विश्वविद्यालय चरित्र निर्माण एवं वैदिक अध्ययन का एक बड़ा केंद्र बनेगा।

कार्यशाला के दौरान वैदिक संस्कृति और चरित्र निर्माण की थीम पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी. इसके विजेताओं प्रदीप कुमार,अभिषेक उपाध्याय,मौनालीशा नायक को कुलपति द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किये गए। वैभव, कालभूत, एवं शिवानी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। सत्र का संचालन डॉ नौनिहाल गौतम जी ने किया तथा आभार प्रो.दिवाकर शुक्ल ने ज्ञापित किया. सत्र में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं शहर के गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

वैदिक गणित की पाठ्यचर्या पर हुआ मंथन

तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में वैदिक गणित पाठ्क्रम निर्माण की बैठक अतिथि गृह में सम्पन्न हुई जिसमें विद्वानों द्वारा वैदिक गणित के डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यचर्या पर चर्चा करते हुए पाठ्यक्रम निर्माण किया गया. वैदिक गणित के विद्वान श्रीराम चौथाईवाले ने पाठ्यक्रम को केडिट कोर्स के माध्यम से संचालिते किये जाने का सुझाव दिया जिससे छात्र अधिक रूचि से पढ़ सकें. उन्होंने अनुभाव को साझा करते हुए कहा कि क्रेडिट विधि से इन विषयों को पढाये जाने वाले संस्थानों में बहुत ही सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। वैदिक गणित के विद्वान डॉ. राकेश भाटिया जी ने कहा इस पाठ्यक्रम की सामग्री विकास को लेकर कई सुझाव दिए. उन्होंने शिक्षण प्रविधियों पर भी चर्चा कि नवाचारी प्रविधि से इस पाठ्यक्रम की ओर बच्चों को आकर्षित किया जा सकता है. इस बैठक में प्रो. दिवाकर शुक्ला, श्रीराम चौथाईवाले, डॉ. राकेश भाटिया, प्रो. अनुराधा गुप्ता, डॉ. शशिकुमार सिंह, शिवानी खरे, डॉ. आयुष गुप्ता, जितेन्द्र मोहन श्रीवास्तव उपस्थित रहे और अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

फीडबैक सत्र में प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया जिसमें तीनों दिन उपस्थित प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाओं को मंच पर उपस्थित वक्ताओं के समक्ष रखा। मंच पर उपस्थित वक्ताओं ने उनका समाधान किया। प्रो.बी.के. श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों से सार्थक संवाद किया और प्रतिभागियों के प्रश्नों का समाधान किया। प्रो.अंबिकादत्त शर्मा जी ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में कहा कि हमारी संस्कृति हमेशा से उदार रही है और हमारे सीखने की संस्कृति भी सदैव से उदार ही रही है। विश्व गुरू के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि विश्व जिन मूल्यों से संचालित होता है जब वे मूल्य हमारे व्यवहार में उतरते हैं तो विश्व हमारा गुरू हो जाता है। इसके साथ ही पंचकोशों से संबंधित जिज्ञासाएं भी प्रतिभागियों ने उपस्थित विद्वानों के समक्ष रखीं जिस पर वक्ताओं द्वारा सार्थक चर्चा की गई। अतिथि पी.आर.मलैया ने अपने वक्तव्य से प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट किया। प्रतिभागियों ने आगामी सत्रों में कुछ सुधारात्मक सुझाव भी मंचासीन विद्वानों के समक्ष रखे। अतिथि डॉ. बिंदु सिंह ने कहा कि सभी को 6 एस (सेवा, साधना, सत्संग, स्वाध्याय, संस्कृति और संस्कार) अपनाना चाहिए। श्री टीकाराम त्रिपाठी ने भी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया. सत्र की अध्यक्षता प्रो अंबिकादत्त शर्मा ने की. सत्र संचालन डॉ संजय शर्मा ने आभार डॉ. शशिसिंह ने ज्ञापित किया।

तीन दिवसीय कार्यशाला में वैदिक संसद में संस्कृत में दिया उद्बोधन

सागर, आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय कार्यशाला वैदिक उत्सव के रूप में वैदिक गणित एवं चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर आयोजित वैदिक संसद/सभा में ई.एफ.ए. पं.रविशंकर शुक्ल शास. कन्या उ.मा.विद्यालय की छात्राओं ने अपनी महत्वपूर्ण सहभगिता निभाते हुए धर्म, कर्म, ईश्वर, व्यक्तित्व या चरित्र निर्माण आत्मतत्व जैसे जटिल विषयों पर वेदों के दृष्टिकोण से संस्कृत भाषा में अपने विचार रखें। इस कार्यक्रम में सहभागी रही छात्राओं ने जिन्होंने अपने उत्तम प्रदर्शन से विद्वतजनों से प्रशंसा प्राप्त की। प्रचार समिति द्वारा प्रतिभा प्रोत्साहन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसमें लोकगीत विधा में कुमारी सेजल प्रजापति कक्षा 12वीं की छात्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उक्त महत्वपूर्ण संस्कृत के क्षेत्र में प्रोत्साहन हेतु आयोजित कार्यशाला में संयुक्त संचालक लोक शिक्षण संभाग सागर के निर्देशानुसार सहभागिता की। विद्यार्थियों की विषय मार्गदर्शिका प्रभारी शिक्षक डॉ. ख्याति बेलापुरकर, सहयोगी शिक्षक डॉ. आशीष जैन, राकेश कुमार जैन, राजेन्द्र जैन ने किया छात्राओं को भारतीय परिवेश में परिधान एवं समन्वय रिंकी राठौर ने किया। प्राचार्य डॉ. महेन्द्र प्रताप तिवारी ने छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि यह अद्वितीय प्रदर्शन है।

तीन दिवसीय कार्यशाला का हुआ समापन, विद्वानों ने तैयार किया वैदिक गणित का पाठ्यक्रम

विश्वविद्यालय में इसी सत्र से वैदिक गणित में डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा कर सकेंगे विद्यार्थी

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपराः वैदिक गणित और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का बुधवार को समापन हुआ। पहले सत्र में वैदिक गणित पाठ्यक्रम निर्माण की बैठक अतिथि गृह में हुई। जिसमें विद्वानों ने वैदिक गणित के डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यचर्या पर चर्चा करते हुए पाठ्यक्रम निर्माण किया।

वैदिक गणित के विद्वान श्रीराम चौथाईवाले ने पाठ्यक्रम को क्रेडिट कोर्स के माध्यम से संचालित करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा क्रेडिट विधि से इन विषयों को पढ़ाए जाने वाले संस्थानों में बहुत ही सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। वैदिक गणित के ही विद्वान डॉ. राकेश भाटिया ने शिक्षण प्रविधियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा नवाचारी प्रविधि से इस पाठ्यक्रम की ओर बच्चों को आकर्षित किया जा सकता है।

प्रो. दिवाकर शुक्ला, प्रो. अनुराधा गुप्ता, डॉ. शशिकुमार सिंह आदि ने भी सुझाव दिए। ऐसे में विद्यार्थी इसी सत्र से यहां से वैदिक गणित में डिग्री, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा कर सकेंगे। इसकी प्रवेश प्रक्रिया चल रही है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया यह कोर्स नई शिक्षा नीति के तहत तैयार किया गया है। विद्यार्थी यूजी के कोर्स में यदि बीच में भी पढ़ाई छोड़ेंगे, तब भी उन्हें नई शिक्षा नीति के अनुसार सर्टिफिकेट, डिप्लोमा दिया जाएगा।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

हम भारतीय ज्ञान पद्धति के महत्व को जान पाएंगे : कुलपति

समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा भारतवर्ष वैदिक संस्कृति से जुड़ा रहा है। हमारा कर्तव्य है कि हम उस पर पुनः चिंतन करें। मनन करें और मंथन के द्वारा आगे ले जाएं। इसी प्रविधि से हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण रख सकते हैं। विश्वविद्यालय में स्थापित वैदिक अध्ययन विभाग में संचालित नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम भारतीय ज्ञान पद्धति की प्रासंगिकता और उसके महत्व को जान पाएंगे।

व्यक्तित्व व चरित्र निर्माण पर छात्राओं ने रखे अपने विचार

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय वैदिक उत्सव कार्यशाला हुई। वैदिक संसद सभा में ईएफए पं. रविशंकर शुक्ल विद्यालय की छात्राओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। छात्राओं ने व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण पर अपने विचार रखें। विद्यार्थियों की विषय मार्गदर्शिका प्रभारी शिक्षक डॉ. ख्याति बेलापुरकर, डॉ. आशीष जैन, राकेश कुमार जैन और राजेन्द्र जैन थे। प्राचार्य डॉ. महेन्द्र प्रताप तिवारी ने छात्राओं को बधाई दी।

सोशल मीडिया लिंक –

1. https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=pfbid0CW4ArwWj1kYQrVgBaEvt9gkayYayjsqay8gbYvnDoANuV9HyWZY442Z5kfMPkAa8l&id=100076048982640&sfnsn=wiwspwa&mibextid=RUbZ1f
2. https://www.instagram.com/p/CxDjyvbswVE/?igshid=MTc4MmM1YmI2Ng==
3. https://twitter.com/DoctorGour/status/1701248427336568839?s=20
4. https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=pfbid031Ekzrw2YXKscniExBqSoWuRPvzQQzUbJ93Vm9mE6LBh7uD7xogoTG3HagKHs1skUl&id=100076048982640&sfnsn=wiwspwa&mibextid=RUbZ1f
5. https://www.instagram.com/p/CxGecRYMWb7/?igshid=MTc4MmM1YmI2Ng==
6. https://x.com/DoctorGour/status/1701659253105385516?s=20
7. https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=pfbid0KYW6rwztqZy937Tfe5mS7uvs7xYj4rcHHrJN4V2pbRDbdt8j6VUUiKuAY5FhdWcGl&id=100076048982640&sfnsn=wiwspwa&mibextid=RUbZ1f
8. https://www.instagram.com/p/CxJJ5HPsfg1/?igshid=MTc4MmM1YmI2Ng==
9. https://x.com/DoctorGour/status/1702036012736856296?s=20
10. https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=pfbid0CW4ArwWj1kYQrVgBaEvt9gkayYayjsqay8gbYvnDoANuV9HyWZY442Z5kfMPkAa8l&id=100076048982640&sfnsn=wiwspwa&mibextid=RUbZ1f
11. https://www.instagram.com/p/CxDjyvbswVE/?igshid=MTc4MmM1YmI2Ng==
12. https://twitter.com/DoctorGour/status/1701248427336568839?s=20
13. https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=pfbid031Ekzrw2YXKscniExBqSoWuRPvzQQzUbJ93Vm9mE6LBh7uD7xogoTG3HagKHs1skUl&id=100076048982640&sfnsn=wiwspwa&mibextid=RUbZ1f
14. https://www.instagram.com/p/CxGecRYMWb7/?igshid=MTc4MmM1YmI2Ng==
15. https://x.com/DoctorGour/status/1701659253105385516?s=20

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, मीडिया अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Email- mediaofficer@dhsgsu.edu.in Website- www.dhsgsu.edu.in